हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 25 अक्टूबर 2026

11 30 स्कूलों के 450 छात्रों ने सोलो डांस और राष्ट्रीय...



12 जमालपुर मोहल्ले में जनस्वास्थ्य विभाग की...



तीन दिवसीय हड़ताल के बाद धन्यवाद सभा में बोले संघर्ष मोर्चा पदाधिकारी

बिजली कर्मियों के संघर्ष की जीत पर गूंजी कर्मचारी एकता की हुंकार

■ यह सिर्फ कर्मचारियों नहीं, जनता, किसानों और सभी संगठनों की सामूहिक जीत

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

बिजली कर्मचारियों के तीन दिवसीय संघर्ष के बाद सरकार की ओर से हरियाणा विद्युत विनियामक आयोग (एचईआरसी) के आदेश की समीक्षा करवाने का लिखित आश्वासन मिलने पर शनिवार को एक्शन ऑफिस, नारनौल के प्रांगण में धन्यवाद सभा हुई। बिजली कर्मचारियों एवं संयुक्त संघर्ष मोर्चा ने हड़ताल के दौरान समर्थन और सहयोग देने वाले कर्मचारी संगठनों, विभागों और कर्मचारियों का आभार जताया। सभा में वक्ताओं ने दो टूक कहा कि सरकार को कर्मचारियों की एकजुट ताकत के आगे झुकना पड़ा है और यह जीत केवल बिजली कर्मचारियों की नहीं, बल्कि प्रदेश की जनता, किसानों, बेरोजगार युवाओं और सभी कर्मचारी संगठनों की सामूहिक जीत है। सभा की संयुक्त अध्यक्षता पावर एसोसिएशन के अध्यक्ष महेंद्र पाल यादव और सर्किल सेक्टर नारनौल के सत्यवान यादव ने की, जबकि मंच संचालन सुभाष रोहिल्ला ने किया।

यह रहे मौजूद

संयुक्त संघर्ष मोर्चा ने हरियाणा रोडवेज कर्मचारी संगठन सहित उन सभी कर्मचारी संगठनों, विभागों और साथियों का विशेष रूप से धन्यवाद किया, जिन्होंने तीन दिवसीय हड़ताल के दौरान बिजली कर्मचारियों के समर्थन में आगे आकर एकजुटता दिखाई। धन्यवाद सभा में किरोड़ीमल सैनी, सतीश सिंह, सतपाल जेई, राजेंद्र नौताना, दीपक एसडीओ, राकेश एसएससी, वीर सिंह एसएससी, कर्मवीर जाखड़, चिंतामणि, सतपाल यादव, प्रमोद शर्मा, वीरेंद्र यादव, आशीष गोरा, वेदप्रकाश जेई, राकेश उपप्रधान, अनिल यादव, सत्यप्रकाश यादव, चंद्रजीत यादव, रामौतार, नवीन यादव, दीपक फोरमैन, ललित फोरमैन, तपन कुमार, प्रेमपाल, यश, जितेंद्र डांगी प्रधान, सुरेंद्र प्रधान, चंद्रजीत यादव, प्रवीण फोरमैन, अशोक कुमार जेई, बलवीर यादव आदि ने अपने विचार रखे।



नारनौल। मीटिंग को संबोधित करते कर्मचारी नेता सुभाष रोहिल्ला। फोटो : हरिभूमि

बिजली व्यवस्था के निजीकरण के खिलाफ था संघर्ष

वक्ताओं ने कहा कि गुरुग्राम और नूंह डिवीजनों में 11 पावर कंपनी को एचईआरसी की ओर से समानांतर विद्युत वितरण लाइसेंस दिए जाने के फैसले के विरोध में संयुक्त बिजली कर्मचारी एवं इंजीनियर संघर्ष मंच के आह्वान पर प्रदेशभर में 22 से 24 अक्टूबर तक तीन दिवसीय हड़ताल की गई थी। कर्मचारियों ने इस फैसले को बिजली निगमों, कर्मचारियों, किसानों, बेरोजगार युवाओं और आम जनता के हितों के खिलाफ बताते हुए इसके विरोध में मोर्चा खोला। वक्ताओं ने कहा कि हड़ताल के दूसरे दिन बिजली व्यवस्था पर व्यापक असर पड़ा। इसके बाद सरकार को कर्मचारियों की मांगों पर गंभीरता से विचार करना पड़ा। ऊर्जा मंत्री और मुख्यमंत्री के माध्यम से एचईआरसी के आदेश की समीक्षा करवाने का लिखित आश्वासन मिलने तथा सरकार और कर्मचारी संगठनों के बीच सहमति बनने के बाद हड़ताल वापस लेने का निर्णय लिया गया।

एकजुटता ने सरकार को सोचने पर किया मजबूर

संघर्ष मोर्चा पदाधिकारियों ने कहा कि यह मामला केवल बिजली कर्मचारियों के हितों तक सीमित नहीं था। एचईआरसी के फैसले का सीधा असर आम जनता, किसानों, बेरोजगार युवाओं और प्रदेश की बिजली व्यवस्था के भविष्य पर पड़ना था। यही कारण रहा कि संघर्ष धीरे-धीरे कर्मचारियों से आगे बढ़कर जनहित का मुद्दा बन गया। आंदोलन के दौरान विभिन्न कर्मचारी संगठनों, विभागों और सामाजिक वर्गों ने जिस मजबूती के साथ बिजली कर्मचारियों का साथ दिया, उससे संघर्ष को ताकत मिली। सरकार को भी यह संदेश गया कि जनहित से जुड़े फैसलों के खिलाफ कर्मचारी और जनता एकजुट होकर आवाज उठा सकते हैं।

भविष्य में जनविरोधी फैसलों पर दी चेतावनी

संयुक्त संघर्ष मोर्चा ने कहा कि इस संघर्ष की सफलता किसी एक संगठन या विभाग की जीत नहीं है। यह प्रदेश के कर्मचारियों, विभिन्न विभागों, संगठनों, किसानों और आम जनता की सामूहिक जीत है। जब कर्मचारी और जनता अपने अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए एकजुट होकर आवाज उठाते हैं तो सरकार को उनकी बात सुननी पड़ती है। सभा के माध्यम से सरकार को चेतावनी भी दी गई कि भविष्य में कर्मचारी और जनविरोधी फैसले लेने से पहले उनके परिणामों पर गंभीरता से विचार किया जाए। वक्ताओं ने कहा कि बिजली जैसी आवश्यक सार्वजनिक सेवा को मजबूत बनाए रखना प्रदेश की जनता के हित में है और किसी भी ऐसे फैसले का विरोध किया जाएगा, जिससे सार्वजनिक बिजली व्यवस्था कमजोर होती हो।

शहर में आधी रात तक चली बिजली के लिए जद्दोजहद, गांवों में सुबह तक अंधेरा

धौलेड़ा फीडर के दर्जनों गांवों में शनिवार सुबह 11:30 बजे तक बिजली रही गुल

नारनौल। तीन दिन तक बिजली संकट की मार झेलने के बाद शुक्रवार देर शाम हड़ताल खत्म हुई तो लोगों को राहत की उम्मीद बंधी, लेकिन बिजली व्यवस्था को पटरी पर लौटने में कई घंटे लग गए। नारनौल शहर में कर्मचारी देर रात तक बिजली बहाल करने में जुटे रहे। कहीं देर शाम करीब नौ बजे के बाद आपूर्ति शुरू हुई तो कहीं आधी रात तक इंतजार करना पड़ा। शहर में बिजली लौटने के बाद भी ग्रामीण क्षेत्रों का संकट तुरंत दूर नहीं हुआ। धौलेड़ा 33 केवी फीडर से जुड़े दर्जनों गांवों में शनिवार सुबह 11 बजकर 30 मिनट पर बिजली आपूर्ति बहाल हो सकी। हड़ताल के दौरान बिजली खपत चार मेगावाट तक सिमटने से जिले में ब्लैकआउट जैसे हालात बन गए थे। बिजली बंद होने से पेयजल और दूध की आपूर्ति भी प्रभावित हुई, जिससे आमजन की मुश्किलें बढ़ गईं। बिजली कर्मचारियों की हड़ताल समाप्त होने की घोषणा के बाद शुक्रवार शाम करीब साढ़े सात बजे कर्मचारियों ने बिजली आपूर्ति बहाल करने का काम शुरू किया। पहले प्राथमिकता के आधार पर जज आवास, प्रशासनिक अधिकारियों के आवास और हुडा सहित विभिन्न क्षेत्रों में बिजली चालू की गई। इसके बाद नारनौल शहर के सभी छह जोन में एक-एक करके आपूर्ति शुरू की गई। अलग-अलग क्षेत्रों में बिजली पहुंचने का सिलसिला देर रात तक चलता रहा। जिन घरों में कई घंटे से बिजली नहीं थी, वहां लोगों ने मोबाइल फोन चार्जिंग पर लगाए और बंद पड़े फ्रिज चालू किए।

■ हड़ताल खत्म होते ही बिजली बहाली में जुटे कर्मचारी, छह जोन में चरणबद्ध शुरू हुई आपूर्ति



नारनौल। धौलेड़ा फीडर के अधीन मरम्मत कार्य में जुटे बिजली कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि



नारनौल। टूटे तार को जोड़ते निगम कर्मी।

शनिवार को दूध भी नहीं आया: हड़ताल का असर दूध की आपूर्ति पर भी दिखाई दिया। नारनौल में धारूहेड़ा स्थित प्लांट से दूध आता है। आपूर्ति प्रभावित होने के कारण शनिवार सुबह शहर की कई दुकानों पर दूध नहीं पहुंचा। दूध लेने पहुंचे ग्राहकों को निराश होकर लौटना पड़ा। इस तरह बिजली संकट ने रोशनी और पेयजल के साथ रोजमर्रा की एक और जरूरी जरूरत को प्रभावित किया।

धौलेड़ा फीडर पर करना पड़ा लंबा इंतजार

नारनौल शहर में शुक्रवार रात से बिजली बहाल करने का काम शुरू हो गया था, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में कई जगह शनिवार सुबह तक आपूर्ति ठप रही। धौलेड़ा का 33 केवी फीडर इसका उदाहरण बना। इस फीडर से धौलेड़ा और आसपास के दर्जनों गांव जुड़े हैं। बिजली नहीं होने से ग्रामीण परेशान रहे और पेयजल संकट भी गहराने लगा। हड़ताल खत्म होने के बाद भी आपूर्ति बहाल होने में देरी से ग्रामीणों में नाराजगी रही। शनिवार सुबह 11 बजकर 30 तक इस फीडर से बिजली आपूर्ति शुरू हो सकी। इसके बाद ग्रामीणों के साथ बिजली बहाली के काम में जुटे कर्मचारियों ने भी राहत की सांस ली।

बिजली के साथ पानी का संकट भी गहराया

बिजली आपूर्ति ठप रहने का असर पेयजल व्यवस्था पर भी पड़ा। घरों में नलों से पानी नहीं पहुंचने के कारण लोगों के रोजमर्रा के काम प्रभावित हुए। शनिवार सुबह बिजली आने के बाद कई क्षेत्रों में जलापूर्ति भी शुरू हुई तो लोगों ने राहत की सांस ली। खासकर घरेलू कामकाज संभालने वाली महिलाओं को बड़ी राहत मिली, जिन्हें पानी की कमी के चलते परेशानी उठानी पड़ रही थी।

चार मेगावाट तक गिर गई थी जिले की बिजली खपत

जिले में सामान्य दिनों में रोजाना करीब 275 मेगावाट बिजली की खपत होती है। 21 अक्टूबर को शाम पांच बजे यह खपत करीब 277 मेगावाट थी। रात 10 बजे हड़ताल शुरू होने के बाद बिजली खपत लगातार गिरने लगी। 22 अक्टूबर को यह महज चार से 11 मेगावाट के बीच रह गई, जबकि 23 अक्टूबर को भी दिनभर खपत चार से 10 मेगावाट के बीच रही। बिजली की खपत में आई इस भारी गिरावट के दौरान जिले के अनेक क्षेत्रों में ब्लैकआउट जैसे हालात बने रहे।

पटीकरा वाटर सप्लाई से जुड़े मोहल्लों में हा-हाकार

नारनौल। बिजली संकट से जूझ रहे शहरवासियों की परेशानी अभी खत्म भी नहीं हुई थी कि अब पानी की किल्लत ने लोगों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। पटीकरा वाटर सप्लाई से जुड़े शहर के कई मोहल्लों में पिछले तीन-चार दिनों से पानी की सप्लाई ठप पड़ी है। बताया जा रहा है कि वाटर सप्लाई की मोटर खराब होने के कारण जलापूर्ति बाधित हुई है। कई दिन बीत जाने के बावजूद मोटर ठीक नहीं होने से लोगों में रोष बढ़ता जा रहा है। जलापूर्ति बंद होने से प्रभावित मोहल्लों के लोगों को पीने के पानी के साथ-साथ रोजमर्रा के जरूरी कामों के लिए भी परेशान होना पड़ रहा है। लोगों का कहना है कि पानी जैसी मूलभूत सुविधा के लिए उन्हें कई दिनों तक इंतजार करना पड़ रहा है, जबकि विभाग को मोटर खराब होने की सूचना मिलते ही तत्काल व्यवस्था करनी चाहिए थी। शहरवासियों का सवाल है कि जब विभाग को मोटर खराब होने की जानकारी है तो उसे ठीक करवाने में इतनी देरी क्यों हो रही है? आखिर जिम्मेदार अधिकारी कब तक लोगों की इस परेशानी का समाधान करेंगे? लोगों ने मांग की है कि खराब मोटर को तत्काल दुरुस्त करवाकर जलापूर्ति बहाल की जाए। लोगों ने यह भी कहा कि जब तक नियमित जलापूर्ति शुरू नहीं होती, तब तक प्रभावित मोहल्लों में टैंकर या अन्य वैकल्पिक व्यवस्था के माध्यम से पानी उपलब्ध करवाया जाए। उनका कहना है कि बिजली संकट के बाद अब पानी के लिए भी लोगों को भटकना पड़ रहा है, ऐसे में संबंधित विभाग को मामले को गंभीरता से लेते हुए तुरंत राहत पहुंचानी चाहिए।

सरकारी स्कूलों में पेयजल की गुणवत्ता की होगी जांच

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से शिक्षा विभाग ने सभी सरकारी विद्यालयों के मुखियाओं को पेयजल के नमूनों की जांच करवाकर रिपोर्ट प्राप्त करने के निर्देश दिए हैं। इस संबंध में जारी पत्र में रिपोर्ट प्राप्त करने, कार्यालय में जमा करवाने और एमआईएस पोर्टल पर अपलोड करने की प्रक्रिया स्पष्ट की गई है। निर्देशों के अनुसार प्रत्येक विद्यालय को जन स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से अपने यहां उपलब्ध पेयजल के नमूनों की जांच करवानी होगी और जांच रिपोर्ट अनिवार्य रूप से प्राप्त करनी होगी। यदि जांच रिपोर्ट में पेयजल पीने योग्य पाया जाता है, तो विद्यालय मुखिया को रिपोर्ट की एक प्रति खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय में भेजनी होगी। इसके साथ ही उसी रिपोर्ट की एक प्रति एमआईएस पोर्टल पर भी अपलोड करनी होगी।

■ जन स्वास्थ्य विभाग के मार्फत मिली रिपोर्ट बीईओ कार्यालय में करवानी होगी जमा

क्या कहते हैं डीईओ

जिला शिक्षा अधिकारी विश्वेश्वर कौशिक ने बताया कि सभी स्कूलों को बीईओ कार्यालय के मार्फत आदेश दिए गए है। जनस्वास्थ्य विभाग के मार्फत तैयार होने वाली रिपोर्ट को संबंधित खण्ड शिक्षा अधिकारी कार्यालय में जमा करवानी होगी। साथ ही एमआईएस पोर्टल पर अपलोड करनी होगी ताकि आवश्यक कार्रवाई की जा सके।

रिपोर्ट को एमआईएस पोर्टल पर करनी होगी अपलोड

वहीं यदि जांच में पेयजल पीने योग्य नहीं पाया जाता है, तो इसकी रिपोर्ट भी खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय में जमा करवानी होगी और एमआईएस पोर्टल पर अपलोड करना होगा, ताकि पेयजल की गुणवत्ता से संबंधित स्थिति का रिकॉर्ड उपलब्ध रहे और आवश्यक कार्रवाई की जा सके। कार्यालय ने सभी विद्यालय मुखियाओं को निर्देश दिए हैं कि वे जन स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से ही जांच रिपोर्ट प्राप्त करें तथा निर्धारित प्रक्रिया का कड़ाई से पालन करते हुए आवश्यक दस्तावेज समय-सीमा के भीतर जमा करवाएं। विद्यालयों में स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता विद्यार्थियों के स्वास्थ्य से सीधे जुड़ा विषय है।



गोमला का किसान अचेत होकर गिरा, अस्पताल में कराया दाखिल

कनीना मंडी में पनप रही अव्यवस्था से किसान परेशान

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

अनाज मंडी में प्रशासनिक दावों और जमीनी हकीकत के बीच का जमीन-आसमान का अंतर एक बार फिर उजागर हुआ है। सरकारी निर्देशों के अनुसार मंडी में खरीद प्रक्रिया और गेट खुलने का समय सुबह आठ बजे तय है, लेकिन हकीकत यह है कि सुबह के नौ बजे के बाद भी न तो मंडी के मुख्य द्वार खोले गए और न ही गेट पास जारी किए गए। शनिवार सुबह के इस नजारे को लेकर किसानों में तरह-तरह की चर्चाएं जन्म ले रही हैं।

मार्केट कमेटी सचिव द्वारा जारी शेड्यूल के मुताबिक शनिवार को गुढ़ा, गाहड़ा, गोमली, गोमला, इसराना, झाड़ली, झिगावन, ककराला, कलवाड़ी, करीरा व कपूरी गांवों के किसानों का बाजरा खरीदा जाना था, इससे पूर्व 23 अक्टूबर के किसान भी खड़े थे। शुक्रवार को सायं सात बजे मंडी में खरीद कार्य बंद कर दिया था। इसलिए वे किसान मजबूरन अपनी बारी का इंतजार करते रहे। इस किसानों को कोई टोकन जारी नहीं किए गए।

किसान मंडी के बाहर वाहनों की लंबी कतारों में खड़े इंतजार करने को मजबूर हैं। किसानों का आरोप है कि सुबह नौ बजे से पहले मंडी में खरीद शुरू होना तो दूर, गेट पास जारी करने तक की जहमत नहीं उठाई जाती।

किसानों को घंटों सड़क किनारे धूल फांकनी पड़ती है। मौके पर मौजूद किसानों मनीत खैराना, मनोज गोमला, मुकेश गुढ़ा का कहना है कि वे शुक्रवार सायं छह बजे ही मंडी पहुंच गए थे, लेकिन मंडी के अधिकारियों की व्यवस्था के कारण 24 घंटे बाद तक उनका बाजरा नहीं खरीदा जा सका।

पिछले लंबे समय से बाजरा बेचने को इंतजार कर रहे गोमला गांव का एक किसान चक्कर खाकर गिर गया। जिसे किसानों ने अपने स्तर पर उप नागरिक अस्पताल में दाखिल कराया। किसानों की लंबी कतार को देखते हुए सिटी थाना इंचार्ज पंकज कुमार अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे तथा व्यवस्था बनाने के प्रयास किए।

इस बारे में मार्केट कमेटी के सचिव अजीत सिंह व मंडी सुपरवाइजर कुलदीप सिंह ने बताया कि मंडी से बाहर के धर्म कांटे स्वीकृत नहीं किए जाएंगे। मंडी में खराब पड़े दूसरे कांटे को ठीक कराने का काम शुरू करा दिया गया है। मंडी में बिजली-पानी की समुचित व्यवस्था की गई है।





कनीना। सुबह नौ बजे मंडी गेट पर खरीद का इंतजार करते किसान व व्यवस्था बनाने में जुटे सिटी थाना इंचार्ज पंकज कुमार।

फिजिकल गोल्ड, ईटीएफ और म्यूचुअल फंड के फायदे और सीमाएं

सोने में निवेश का सही रास्ता चुनें चमक ही नहीं लागत को भी देखें

खरीद-बिक्री का खर्च, सुरक्षा, निवेश की सुविधा और लागत तय करेंगे वास्तविक मुनाफा

बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोले, केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं, क्षमता को जानें

बिजनेस डेस्क

सोना भारतीय परिवारों के लिए केवल आभूषण या परंपरा का प्रतीक नहीं, बल्कि मुश्किल वक्त का भरोसेमंद सहारा भी रहा है। महंगाई, आर्थिक अनिश्चितता और शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच निवेशक अपने पोर्टफोलियो में सोने को जगह देना पसंद करते हैं। हालांकि, अब सोने में निवेश का मतलब केवल गहने या सिक्के खरीदकर तिजोरी में रखना नहीं रह गया है। बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोल दिए हैं। कोई फिजिकल गोल्ड खरीदता है, तो कोई गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) या गोल्ड म्यूचुअल फंड के जरिए निवेश करता है। तीनों विकल्पों का उद्देश्य सोने की कीमत में होने वाली बढ़ोतरी से लाभ उठाना हो सकता है, लेकिन इनकी लागत, खरीदने-बेचने की प्रक्रिया, सुरक्षा और निवेश की सुविधा अलग-अलग है। इसलिए केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं है। यह समझना भी जरूरी है कि कौन-सा विकल्प आपकी जरूरत, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के अनुकूल है।



फिजिकल गोल्ड

फिजिकल गोल्ड में निवेश का सबसे पारंपरिक तरीका सोने के सिक्के, छड़ या आभूषण खरीदना है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक के पास सोना वास्तविक रूप में मौजूद रहता है। जरूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल उपहार देने, पारिवारिक आयोजनों या अन्य व्यक्तिगत जरूरतों के लिए भी किया जा सकता है। हालांकि, निवेश के नजरिये से आभूषण और सोने के सिक्के एक जैसे नहीं हैं। गहने खरीदते समय मेकिंग चार्ज और लागू वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का खर्च जुड़ता है। दोबारा बेचने पर मेकिंग चार्ज सामान्यतः वापस नहीं मिलता। शुद्धता की जांच, दुकानदार की खरीद नीति और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर के कारण भी वास्तविक मुनाफा घट सकता है। सिक्कों और छड़ों में आमतौर पर आभूषणों की तुलना में मेकिंग चार्ज कम होता है, फिर भी खरीद मूल्य और बिक्री मूल्य का अंतर ध्यान में रखना चाहिए। इसके अलावा, घर में सोना रखने पर चोरी या गुम होने का जोखिम रहता है। बैंक लॉकर में रखने पर अतिरिक्त खर्च हो सकता है। इसलिए जो लोग केवल निवेश के लिए सोना खरीदना चाहते हैं, उन्हें आभूषणों के बजाय कम अतिरिक्त लागत वाले विकल्पों पर विचार करना चाहिए।

गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ ऐसे निवेश फंड हैं, जिनकी इकाइयां शेयर बाजार में खरीदी और बेची जाती हैं। ये आमतौर पर भौतिक सोने में निवेश करते हैं और सोने की कीमत में होने वाले बदलाव के अनुरूप रिटर्न देने का लक्ष्य रखते हैं। इस तरह निवेशक को घर में सोना रखने, उसकी सुरक्षा करने या शुद्धता की जांच कराने की चिंता नहीं करनी पड़ती। गोल्ड ईटीएफ में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट और ट्रेडिंग खाते की जरूरत होती है। निवेशक बाजार खुलने के दौरान प्रचलित भाव पर यूनिट खरीद या बेच सकता है। हालांकि, वास्तविक लेनदेन मूल्य बाजार में मांग-आपूर्ति, खरीद-बिक्री के अंतर और फंड की शुद्ध परिसंपत्ति कीमत से प्रभावित हो सकता है। इस विकल्प में फंड का प्रबंधन खर्च, ब्रोकरेज और अन्य लागू शुल्क रिटर्न को प्रभावित कर सकते हैं। निवेश से पहले एक्सपेंस रेशियो, कारोबार की मात्रा और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर की तुलना करनी चाहिए। केवल किसी ईटीएफ की एक यूनिट का भाव कम होने से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि वह दूसरे फंड से सस्ता है। अलग-अलग फंड की एक यूनिट के पीछे सोने की मात्रा अलग हो सकती है।

गोल्ड म्यूचुअल फंड

जिन निवेशकों के पास डीमैट खाता नहीं है या जो हर महीने नियमित रकम निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक विकल्प हो सकते हैं। ऐसे फंड आमतौर पर गोल्ड ईटीएफ की इकाइयों में निवेश करते हैं। निवेशक इनमें एकमुश्त रकम लगा सकता है या अपनी क्षमता के अनुसार व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) के जरिए नियमित निवेश कर सकता है। इन फंडों में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट खाते की आवश्यकता नहीं होती। निवेशक संबंधित म्यूचुअल फंड की प्रक्रिया के अनुसार सीधे निवेश कर सकता है।

तीनों विकल्पों में कैसे करें तुलना?

- **कुल लागत:** फिजिकल गोल्ड में मेकिंग चार्ज, जीएसटी और खरीद-बिक्री का अंतर देखें। ईटीएफ व म्यूचुअल फंड में कुल खर्च की तुलना करें।
- **निवेश की सुविधा:** नियमित मासिक निवेश के लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक हो सकता है, जबकि बाजार में खुद यूनिट खरीदने-बेचने के लिए ईटीएफ उपयोगी है।
- **सुरक्षा:** फिजिकल गोल्ड की सुरक्षा निवेशक की जिम्मेदारी है। डिजिटल निवेश विकल्पों में भौतिक भंडारण की चिंता नहीं होती, लेकिन बाजार और फंड से जुड़े जोखिम बने रहते हैं।
- **निकासी:** निवेश से पैसा निकालने की प्रक्रिया और उसमें लगने वाले समय को समझें। ईटीएफ की बिक्री बाजार के कारोबार पर निर्भर करती है, जबकि म्यूचुअल फंड में लागू निकासी नियम महत्वपूर्ण हैं।
- **कराधान:** कर नियम निवेश के प्रकार, खरीद की तारीख और लागू कानूनों के अनुसार अलग हो सकते हैं। इसलिए पुराने नियमों के आधार पर अनुमान लगाने के बजाय निवेश के समय मौजूदा कर प्रावधानों की पुष्टि करें।

पोर्टफोलियो में संतुलन जरूरी

सोने में निवेश का उद्देश्य केवल अधिकतम मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लाना भी हो सकता है। हालांकि, सोने की कीमतें भी घटती-बढ़ती हैं और कोई भी विकल्प निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं देता। गोल्ड ईटीएफ और गोल्ड म्यूचुअल फंड में निवेश करने से सोने की कीमतों से जुड़ा जोखिम समाप्त नहीं होता। निवेशकों को अपनी पूरी बचत सोने में लगाने के बजाय उसे अन्य निवेश साधनों के साथ संतुलित रखने पर विचार करना चाहिए। आपातकालीन जरूरतों के लिए पर्याप्त नकदी और अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुरूप निवेश योजना भी जरूरी है।

14 साल में 5 करोड़ जोड़ना लक्ष्य तो निवेश की रणनीति में करें बदलाव

बिजनेस डेस्क

नौकरी शुरू करने के बाद हर व्यक्ति चाहता है कि एक समय ऐसा आए, जब उसे रोजी-रोटी के लिए काम करने की मजबूरी न रहे। आर्थिक स्वतंत्रता का यही सपना युवाओं को जल्दी निवेश शुरू करने के लिए प्रेरित करता है, लेकिन यदि कोई 28 वर्ष की उम्र में 70 हजार रुपये मासिक वेतन पाता हो और 42 वर्ष की उम्र में नौकरी छोड़कर रिटायर होना चाहता हो, तो उसके सामने चुनौती बड़ी है।

खासकर तब, जब उसका लक्ष्य 5 करोड़ रुपये फंड तैयार करना हो। इसी सवाल को समझने के लिए एक वित्तीय प्रयोग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटजीपीटी से निवेश योजना तैयार कराई गई। इसमें 25 हजार की मासिक व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी), हर साल निवेश में 10% बढ़ोतरी और निवेश पर सालाना 15% प्रभावी प्रतिफल की धारणा रखी गई। अनुमान के मुताबिक, 14 साल तक नियमित निवेश करने के बाद भी 42 वर्ष की उम्र में करीब 2.10 करोड़ ही जुट पाएंगे। यानी 5 करोड़ के लक्ष्य से लगभग 2.90 करोड़ रुपये कम रह जाएंगे।



25 हजार की एसआईपी और हर साल 10% निवेश बढ़ाने पर 42 साल की उम्र तक जुटेंगे 2.10 करोड़

70000 की आय में कितनी गुंजाइश

निवेश योजना बनाने से पहले आय और खर्च का हिसाब समझना जरूरी है। इस उदाहरण में निवेशक नोएडा में रहता है और उसकी मासिक आय 70 हजार रुपये है। इसमें से 14 हजार मकान के किराये पर खर्च होते हैं। राशन और घरेलू जरूरतों पर 5 हजार, बिजली-पानी पर 2 हजार, इंटरनेट और मोबाइल पर 1,500 तथा परिवहन पर 2 हजार खर्च होते हैं। बाहर खाने और अन्य मनोरंजन पर 5 हजार, व्यक्तिगत खरीदारी पर 3 हजार, बीमा और चिकित्सा पर 2,500 तथा परिवार की मदद और दूसरे विविध खर्चों पर 10 हजार खर्च होते हैं। इस तरह कुल मासिक खर्च 45 हजार बैठता है और निवेश के लिए 25 हजार बचते हैं। यानी निवेशक अपनी आय का लगभग 35.7% निवेश कर सकता है। पूरी बची रकम एसआईपी में लगाने से पहले आपातकालीन जरूरतों, अनियमित खर्चों व पर्याप्त बीमा की व्यवस्था करना जरूरी है।

हर वर्ष बढ़ेगी एसआईपी फिर लक्ष्य अधूरा

योजना में माना गया कि निवेशक की सैलरी हर साल 10% बढ़ेगी और वह अपनी एसआईपी में भी उतनी ही बढ़ोतरी करेगा। शुरुआत में 25 हजार की मासिक एसआईपी से सालाना 3 लाख निवेश होंगे। दूसरे वर्ष मासिक निवेश बढ़कर 27,500 और तीसरे वर्ष 30,250 हो जाएगा। पांचवें वर्ष तक मासिक एसआईपी करीब 36,603 पहुंचने का अनुमान है। दसवें वर्ष में यह लगभग 58,949 और चौदहवें वर्ष में करीब 86,307 हो जाएगी। इस गणना के अनुसार, 14 वर्षों में निवेशक अपनी जेब से कुल लगभग 83.92 लाख लगाएगा। यदि निवेश पर 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता है, तो कुल निवेश का मूल्य करीब 2.10 करोड़ हो सकता है। इसमें लगभग 1.26 करोड़ संभावित निवेश वृद्धि से आएंगे।

5 करोड़ जुटाने में लगेंगे 19 साल

यदि निवेशक इसी योजना पर चलता रहे, एसआईपी हर साल 10% बढ़ाता रहे और 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता रहे, तो 5 करोड़ का लक्ष्य लगभग 18 साल 10 महीने में हासिल होने का अनुमान है। यानी 28 वर्ष की उम्र में निवेश शुरू करने वाला व्यक्ति करीब 47 वर्ष की उम्र में इस लक्ष्य तक पहुंच सकता है। यह उसकी निर्धारित रिटायरमेंट उम्र से लगभग पांच साल बाद है। इससे स्पष्ट है कि केवल नियमित एसआईपी और वेतन के साथ बढ़ते निवेश पर निर्भर रहकर 42 वर्ष में 5 करोड़ जुटाना इस योजना के तहत संभव नहीं दिखता। लक्ष्य हासिल करने के लिए निवेश की रकम बढ़ानी होगी, मौजूदा बचत का सहारा लेना होगा, अतिरिक्त आय के स्रोत तलाशने होंगे या रिटायरमेंट की समयसीमा में बदलाव करना होगा।

लक्ष्य पाने के लिए क्या बदलना होगा

सबसे पहले, वेतन बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। यदि हर साल वेतन में 10% की वृद्धि होती है, तो खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ाना जरूरी नहीं है। वेतन वृद्धि का एक अतिरिक्त हिस्सा निवेश में लगाने से लंबी अवधि में बड़ा अंतर आ सकता है। बोनस या दूसरी अतिरिक्त आय का कुछ हिस्सा भी वित्तीय लक्ष्यों के लिए रखा जा सकता है। दूसरा, निवेश में विविधता बनाए रखना जरूरी है। लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड पूंजी बढ़ाने की संभावना दे सकते हैं, लेकिन इनमें बाजार का जोखिम भी रहता है। ऋण आधारित निवेश और दूसरे साधनों का चयन निवेशक की जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए। केवल जल्दी लक्ष्य हासिल करने के लिए अत्यधिक जोखिम लेना समझदारी नहीं है। तीसरा, महंगाई को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

आज के 5 करोड़ और 14 साल बाद के 5 करोड़ की क्रय शक्ति समान नहीं होगी। इसलिए रिटायरमेंट के समय के खर्च, स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों और भविष्य की महंगाई को ध्यान में रखकर लक्ष्य तय करना चाहिए। कर, निवेश शुल्क और रिटायरमेंट के बाद नियमित निकासी का असर भी गणना में शामिल होना चाहिए।

रिटायरमेंट का लक्ष्य बड़ी रकम नहीं

जल्दी रिटायर होने का अर्थ केवल निवेश खाते में बड़ी रकम जमा करना नहीं है। यह भी तय करना होगा कि रिटायरमेंट के बाद हर महीने कितना खर्च होगा, जमा पूंजी कितने वर्षों तक चलनी चाहिए और आपातकालीन जरूरतों के लिए कितनी रकम अलग रखनी होगी। यदि रिटायरमेंट के बाद कोई नियमित आय नहीं होगी, तो निवेश से निकासी की योजना और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।



स्मॉलकैप फंड में 25% तक रिटर्न, लेकिन निवेश से पहले जोखिम समझना भी जरूरी

बचत मंत्र

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में तेजी के दौरान स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड निवेशकों को आकर्षित करते हैं। छोटी कंपनियों में कारोबार बढ़ाने और तेजी से आगे निकलने की क्षमता होती है, इसलिए इनमें निवेश करने वाले फंड लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देने की संभावना रखते हैं। लेकिन यही निवेश बाजार में गिरावट आने पर बड़ा नुकसान भी करा सकता है। वर्ष 2025 की जनवरी-मार्च तिमाही में प्रमुख स्मॉलकैप फंडों को करीब 13 से 14 प्रतिशत तक नुकसान हुआ। वर्ष 2026 की पहली तिमाही में भी इस श्रेणी के फंडों में लगभग 12 से 13 प्रतिशत की गिरावट आई। इसके बाद अप्रैल-जून 2026 में स्मॉलकैप फंडों में करीब 23 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली। यह उतार-चढ़ाव बताता है कि इस श्रेणी में रिटर्न की संभावना के साथ जोखिम भी काफी अधिक है। इक्विटीमास्टर की 20 अक्टूबर 2026 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न के आधार पर क्वांट स्मॉलकैप, बंधन स्मॉलकैप, इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप और बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप प्रमुख फंडों में शामिल हैं। इनका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न करीब 22.5 से 25 प्रतिशत के बीच रहा है।

क्वांट स्मॉलकैप फंड

पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न में क्वांट स्मॉलकैप फंड करीब 25.04 प्रतिशत के साथ पहले स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 17.84 प्रतिशत है। फंड के प्रमुख निवेश में एचएफसीएल, आरबीएल बैंक, अडाणी एंटरप्राइजेज, अडाणी पावर और एजिस लॉजिस्टिक्स शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 18.2 प्रतिशत रही।

बंधन स्मॉलकैप फंड

बंधन स्मॉलकैप फंड लगभग 24.4 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ दूसरे स्थान पर है। रिपोर्ट में इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 19 प्रतिशत बताया गया है। इसकी खासियत बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रमुख फंडों में इसका शार्प और सॉर्टिनो अनुपात बेहतर रहा है। ये अनुपात बताते हैं कि किसी फंड ने कितना जोखिम उठाकर कितना रिटर्न दिया। इस फंड का आकार तेजी से बढ़ा है। मार्च 2022 में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 1,410 करोड़ रुपये थी, जो अगस्त 2026 में बढ़कर लगभग 34,180 करोड़ रुपये हो गई।

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 24.05 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ तीसरे स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न 18.49 प्रतिशत रहा, जबकि निफ्टी स्मॉलकैप 250 का रिटर्न 12.42 प्रतिशत था। तीन साल की अवधि में भी इस फंड का प्रदर्शन अपने बेंचमार्क से बेहतर रहा। फंड का निवेश विभिन्न कंपनियों में फैला है। इसकी प्रमुख हिस्सेदारियों में साई लाइफ साइंसेज, इटर्नल, एम्बर एंटरप्राइजेज, आदित्य इन्फोटेक और कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज शामिल हैं।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड इस श्रेणी के बड़े फंडों में शामिल है। रिपोर्ट में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 81,000 करोड़ है। इसका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न लगभग 24 प्रतिशत और वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 17.1 प्रतिशत रहा। फंड के पोर्टफोलियो में बड़ी संख्या में शेयर शामिल हैं और किसी एक कंपनी में निवेश का हिस्सा अपेक्षाकृत सीमित रखा गया है। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की अस्थिरता शीर्ष पांच फंडों में सबसे कम, करीब 17.5 प्रतिशत रही।

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 22.55 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ पांचवें स्थान पर है। इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 18.75 प्रतिशत रहा। इसके प्रत्यक्ष निवेश विकल्प का वार्षिक व्यय अनुपात 0.42 प्रतिशत बताया गया है। रिपोर्ट में इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 20 प्रतिशत बताई गई है, शीर्ष पांच फंडों में सबसे अधिक है।

इन बातों का रखें ध्यान

स्मॉलकैप फंड में निवेश करने से पहले केवल एक, तीन या पांच साल का रिटर्न देखकर फैसला करना पर्याप्त नहीं है। यह भी देखना चाहिए कि बाजार में गिरावट के दौरान फंड ने कैसा प्रदर्शन किया, उसका पोर्टफोलियो कितना विविध है।

रिटायरमेंट पर एनपीएस का पूरा पैसा निकालना जरूरी नहीं

60 साल की उम्र के बाद निकासी टालने और चरणबद्ध तरीके से पैसा लेने के विकल्प

अलर्ट

बिजनेस डेस्क

नौकरी के दौरान नियमित बचत करके रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड तैयार करना जितना जरूरी है, उतना ही अहम यह तय करना भी है कि रिटायरमेंट के बाद उस पैसे का इस्तेमाल कैसे किया जाए।

सामान्य निकासी में फड की राशि और ग्राहक की श्रेणी के अनुसार तय होंगे नियम

नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) में निवेश करने वाले कई लोगों को लगता है कि 60 साल की उम्र पूरी होते ही उन्हें पूरा पैसा निकालना होगा या फिर तुरंत पेंशन शुरू करनी पड़ेगी। लेकिन ऐसा हर स्थिति में जरूरी नहीं है। पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) के नियमों में निवेशकों को निकासी और पेंशन की योजना बनाने के लिए कई विकल्प दिए गए हैं। इनमें एकमुश्त रकम निकालने, निकासी को आगे टालने और निर्धारित अवधि में किस्तों के जरिए पैसा लेने जैसे विकल्प शामिल हैं। हालांकि, कौन-सा विकल्प उपलब्ध होगा और कितनी रकम निकाली जा सकेगी, यह एनपीएस खाते की श्रेणी, कुल जमा फंड और लागू नियमों पर निर्भर करता है। इसलिए रिटायरमेंट के करीब पहुंच रहे निवेशकों को पहले अपने खाते पर लागू प्रावधान समझने चाहिए।



60 साल बाद कितना पैसा निकाल सकते हैं?

एनपीएस से सामान्य निकासी के नियम सभी निवेशकों के लिए एक जैसे नहीं हैं। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू नियमों के अनुसार, यदि जमा पेंशन फंड 8 लाख तक है, तो पूरी रकम एकमुश्त निकालने का विकल्प उपलब्ध हो सकता है। इससे अधिक राशि होने पर निकासी की सीमा और शेष रकम के इस्तेमाल के नियम लागू होते हैं। कुछ परिस्थितियों में 8 लाख से अधिक और 12 लाख तक के फंड के लिए भी अलग विकल्प दिए गए हैं। बड़े फंड के मामले में लागू नियमों के अनुसार एक हिस्सा एकमुश्त निकाला जा सकता है, जबकि शेष रकम का इस्तेमाल एन्युटी खरीदने या निर्धारित अवधि में चरणबद्ध निकासी के लिए किया जा सकता है। सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए अलग प्रावधान लागू हो सकते हैं। इसलिए यह मान लेना ठीक नहीं है कि हर एनपीएस खाताधारक को अनिवार्य रूप से केवल 60% रकम ही निकालने की अनुमति है।एनपीएस के पुराने नियमों में सामान्य निकासी के समय अधिकतम 60% रकम एकमुश्त निकालने और कम से कम 40% रकम से एन्युटी खरीदने का प्रावधान प्रमुख था। बाद के संशोधनों में कुछ श्रेणियों के लिए विकल्पों का विस्तार किया गया है। ऐसे में निकासी का निर्णय लेने से पहले नवीनतम नियम और अपने खाते की श्रेणी की पुष्टि करना जरूरी है।

निकासी टालने का विकल्प

यदि किसी निवेशक को 60 साल की उम्र में तुरंत पूरे फंड की जरूरत नहीं है, तो वह नियमों के अनुसार निकासी या एन्युटी खरीदने की प्रक्रिया को आगे टालने पर विचार कर सकता है। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू प्रावधानों के तहत पात्र निवेशक 75 साल की उम्र तक खाते में बने रहने या निकासी को स्थगित करने के विकल्प का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस दौरान खाते में निवेशित रकम बाजार के प्रदर्शन के अनुसार बढ़ या घट सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि फंड पर निश्चित ब्याज मिलता रहेगा। इक्विटी और बॉन्ड में निवेश की मात्रा के अनुसार जोखिम और संभावित रिटर्न बदल सकते हैं।

किस्तों में पैसा लेने की सुविधा

एनपीएस में चरणबद्ध निकासी के विकल्प भी उपलब्ध हैं। इसके तहत पात्र निवेशक पूरी निकासी एक साथ करने के बजाय निर्धारित अंतराल पर रकम ले सकते हैं। कुछ विकल्पों में एकमुश्त निकासी वाली रकम को किस्तों में लेने की सुविधा मिलती है, जबकि व्यवस्थित यूनिट निकासी के तहत निवेश की यूनिटें निर्धारित समय के अनुसार भुनाई जाती हैं। यह व्यवस्था म्यूचुअल फंड की व्यवस्थित निकासी योजना जैसी लग सकती है, लेकिन दोनों को एक जैसा नहीं समझना चाहिए।

एन्युटी से कैसे मिलेगी पेंशन?

एन्युटी एक ऐसा वित्तीय उत्पाद है, जिसे बीमा कंपनी से खरीदने पर चुनी गई योजना की शर्तों के अनुसार नियमित पेंशन मिलती है। एनपीएस में लागू नियमों के तहत कुछ स्थितियों में फंड का एक हिस्सा एन्युटी खरीदने के लिए इस्तेमाल करना पड़ता है। इससे रिटायरमेंट के बाद नियमित आय का स्रोत बन सकता है। एन्युटी खरीदने से पहले उसकी पेंशन दर, भुगतान की शर्तें, जीवनसाथी को मिलने वाले लाभ और मृत्यु के बाद खरीद मूल्य की वापसी जैसे विकल्पों को समझना चाहिए। अलग-अलग योजनाओं में मिलने वाली पेंशन और शर्तें अलग हो सकती हैं। एन्युटी का चुनाव केवल अनुमानित मासिक पेंशन देखकर नहीं करना चाहिए।

इन बातों पर दें ध्यान

सबसे पहले अपने एनपीएस खाते की श्रेणी और जमा फंड की मौजूदा राशि की जांच करें। इसके बाद यह तय करें कि रिटायरमेंट के बाद मासिक खर्च चलाने के लिए कितनी रकम चाहिए और अन्य स्रोतों से कितनी आय मिलेगी। यदि तुरंत बड़ी रकम की जरूरत है, तो एकमुश्त निकासी का विकल्प उपयोगी हो सकता है। वहीं नियमित आय की जरूरत होने पर एन्युटी या चरणबद्ध निकासी पर विचार किया जा सकता है। खाते में नामांकित व्यक्ति, बैंक खाते और अन्य जरूरी विवरण भी अपडेट रखें। निकासी से जुड़े कर नियमों की पुष्टि करना न भूलें। यह मानकर न चलें कि एनपीएस से निकाली गई हर रकम और उससे बाद में होने वाली कमाई हमेशा कर-मुक्त होगी।

आरएचपी में कारोबार, वित्तीय स्थिति, प्रमोटर्स के रिकॉर्ड को देखें

आईपीओ में पैसा लगाने से पहले परखें कंपनी की असली ताकत

- गई रकम के इस्तेमाल और शेयर के मूल्यांकन की भी जांच जरूरी
- केवल लिस्टिंग गेन की उम्मीद में निवेश करना पड़ सकता है भारी

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में जब भी किसी कंपनी का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) आता है, निवेशकों के बीच उसे लेकर उत्सुकता बढ़ जाती है। ग्रे मार्केट प्रीमियम, संभावित लिस्टिंग गेन और दूसरे निवेशकों की दिलचस्पी के आधार पर कई लोग आवेदन करने का फैसला कर लेते हैं, लेकिन किसी आईपीओ में भारी मांग होना इस बात की गारंटी नहीं है कि कंपनी भी उतनी ही मजबूत है या उसके शेयर से अच्छा मुनाफा मिलेगा। कई बार आकर्षक प्रचार के पीछे कमजोर वित्तीय स्थिति, बढ़ता कर्ज या जरूरत से ज्यादा मूल्यांकन छिपा हो सकता है। ऐसे में निवेशकों के लिए जरूरी है कि वे कंपनी की असली स्थिति समझने के बाद ही पैसा लगाने का फैसला करें। इसके लिए रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (आरएचपी) एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें कंपनी के कारोबार, वित्तीय प्रदर्शन, जोखिम, प्रबंधन, प्रमोटर्स और आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम के इस्तेमाल की जानकारी दी जाती है। दस्तावेज बड़ा जरूर होता है, लेकिन कुछ अहम पहलुओं पर ध्यान देकर निवेशक बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

1. कंपनी का कारोबार और कमाई का आधार समझें

आईपीओ में निवेश करने से पहले सबसे पहले यह समझें कि कंपनी क्या कारोबार करती है, उसके ग्राहक कौन हैं और उसकी कमाई किन उत्पादों या सेवाओं से होती है। यह भी देखें कि कंपनी जिस क्षेत्र में काम करती है, वहां भविष्य में कारोबार बढ़ने की कितनी संभावनाएं हैं और प्रतिस्पर्धा कितनी कड़ी है। केवल कंपनी के विस्तार संबंधी दावों पर भरोसा करना पर्याप्त नहीं है। पिछले तीन वित्तीय वर्षों की बिक्री, मुनाफे और नकदी प्रवाह के आंकड़ों की तुलना करें। अगर बिक्री लगातार बढ़ रही है, लेकिन मुनाफा स्थिर है या घट रहा है, तो इसकी वजह जानना जरूरी है। इसी तरह, कंपनी के खाते में मुनाफा दिखने के बावजूद अगर उसके नियमित कारोबार से पर्याप्त नकदी नहीं आ रही है, तो यह चिंता का संकेत हो सकता है। यह भी देखें कि कंपनी की कमाई कुछ ही बड़े ग्राहकों पर निर्भर तो नहीं है।

2. प्रमोटर्स और प्रबंधन का पिछला रिकॉर्ड जांचें

कंपनी की सफलता में उसके प्रबंधन और प्रमोटर्स की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए आरएचपी में उनके अनुभव, पिछली कारोबारी गतिविधियों और कंपनी चलाने के तरीके से जुड़ी जानकारियों पर ध्यान दें। देखें कि प्रमोटर्स ने पहले किन कारोबारों में काम किया है और उनका रिकॉर्ड कैसा रहा है। कंपनी के प्रमुख अधिकारियों के वेतन, प्रमोटर्स की हिस्सेदारी और गिरवी रखे गए शेयरों की जानकारी भी उपयोगी हो सकती है। इसके अलावा, कंपनी या उसके प्रमुख अधिकारियों के खिलाफ चल रहे महत्वपूर्ण कानूनी मामलों, नियामकीय कार्रवाई और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े खुलासों को ध्यान से पढ़ें।

3. प्रमोटर्स से जुड़ी कंपनियों के लेनदेन पर नजर रखें

कई कंपनियां अपने प्रमोटर्स, उनके परिवार के सदस्यों या उनसे जुड़ी दूसरी संस्थाओं के साथ कारोबार करती हैं। इन्हें संबंधित पक्षों के साथ लेनदेन कहा जाता है। ऐसे लेनदेन अपने आप में गलत नहीं हैं, लेकिन इनकी रकम, शर्तों और कारोबारी औचित्य की जांच जरूरी है। आरएचपी में देखें कि कंपनी प्रमोटर्स से जुड़ी संस्थाओं को कितना भुगतान करती है, उनसे कितना सामान या सेवाएं खरीदती है और उन्हें कितना पैसा देती है। यह भी समझें कि लेनदेन सामान्य कारोबारी शर्तों पर हो रहा है या नहीं। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों में अचानक बड़ी बढ़ोतरी, असामान्य भुगतान या संबंधित पक्षों के साथ लगातार बढ़ते लेनदेन दिखाई दें, तो उनकी वजह तलाशें।

4. आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम का इस्तेमाल जानें

आईपीओ में आवेदन करने से पहले यह समझना जरूरी है कि कंपनी निवेशकों से पैसा क्यों जुटा रही है। आम तौर पर आईपीओ में फ्रेश इश्यू और ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) शामिल हो सकते हैं। फ्रेश इश्यू में कंपनी नए शेयर जारी करके रकम जुटाती है, जबकि ओएफएस में मौजूदा शेयरधारक अपने शेयर बेचते हैं। ओएफएस से मिलने वाली रकम कंपनी के बजाय शेयर बेचने वाले निवेशकों को मिलती है। आरएचपी में देखें कि फ्रेश इश्यू से मिलने वाले पैसे का इस्तेमाल किस उद्देश्य से किया जाएगा। कंपनी कर्ज चुकाना चाहती है, नई उत्पादन क्षमता स्थापित करना चाहती है, कारोबार का विस्तार करना चाहती है या सामान्य कॉरपोरेट जरूरतों के लिए रकम जुटा रही है? इन उद्देश्यों का कंपनी की भविष्य की वृद्धि पर क्या असर पड़ सकता है, इसे समझें। अगर कंपनी कर्ज चुकाने के लिए पैसा जुटा रही है, तो इससे उसकी वित्तीय स्थिति में सुधार हो सकता है।

5. शेयर का मूल्यांकन और जोखिम जरूर परखें

अच्छी कंपनी का आईपीओ भी खराब निवेश साबित हो सकता है, अगर उसके शेयर बहुत महंगे मूल्य पर पेश किए जा रहे हों। इसलिए कंपनी की वित्तीय स्थिति के साथ उसके मूल्यांकन की तुलना भी जरूरी है। आरएचपी में कंपनी की प्रति शेयर आय, मूल्य-आय अनुपात (पी/ई), शुद्ध परिसंपत्ति मूल्य और दूसरी वित्तीय जानकारियों को देखें। समान कारोबार करने वाली सूचीबद्ध कंपनियों के मूल्यांकन से इसकी तुलना करें। यह समझने की कोशिश करें कि कंपनी जिस कीमत पर शेयर पेश कर रही है, क्या उसका आधार मौजूदा कमाई, भविष्य की वृद्धि और कारोबारी संभावनाओं से मेल खाता है।

शरद पूर्णिमा से शुरू होगा कार्तिक मास का दीपदान, एक माह तक जलेंगे आकाशदीप

आज मनाई जाएगी शरद पूर्णिमा, आकाशदीप व दीपदान को शास्त्रों में बताया विशेष पुण्यकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

धर्म शास्त्रों में आश्विन मास की पूर्णिमा यानी शरद पूर्णिमा को सभी पूर्णिमाओं में श्रेष्ठ माना गया है। इस वर्ष 25 अक्टूबर को शरद पूर्णिमा का पर्व मनाया जाएगा। इसी पावन रात्रि से कार्तिक मास के दीपदान और आकाशदीप की परंपरा का शुभारंभ माना जाता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कार्तिक मास भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय है और इस दौरान दीपदान करने का विशेष महत्व है। बता दें कि शरद पूर्णिमा को महारास पूर्णिमा भी कहा जाता है। मान्यता है कि इसी रात्रि भगवान श्रीकृष्ण ने वृंदावन में महारास किया था। इसी दिन समुद्र मंथन से महालक्ष्मी जी का प्राकट्य होने के कारण इसे कोजागरी पूर्णिमा भी कहा जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार शरद पूर्णिमा की रात्रि चंद्रमा अपनी 16 कलाओं से अमृत वर्षा करता है। इसी कारण इस रात खीर बनाकर चांदनी में रखने की परंपरा है। मान्यता है कि इससे खीर अमृतमय हो जाती है।

शरद पूर्णिमा से एक माह तक आकाशदीप जलाने को भी विशेष पुण्यकारी माना गया है। कार्तिक मास को धर्म शास्त्रों में दामोदर मास कहा गया है। यह मास भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय माना जाता है। कार्तिक मास में किया गया दीपदान अश्वमेध यज्ञ के समान फलदायी बताया गया है।

इस मास में प्रतिदिन प्रातः स्नान कर कोमल तुलसी दलों से भगवान दामोदर कृष्ण की पूजा तथा रात्रि में आकाशदीप दान करना चाहिए। लंबे बांस पर लालटेन के माध्यम से अथवा मंदिर की मुंडेर पर एक माह तक दीप जलाने की परंपरा है।



पितरों की शांति के लिए भी करें दीपदान

कार्तिक मास में पितरों की शांति के लिए भी आकाशदीप का विशेष महत्व है। इस दौरान "नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे। नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः॥" मंत्र के साथ आकाश में दीपदान करने की धार्मिक मान्यता है। स्कंद पुराण में भी आकाशदीप को पितरों के उद्धार का श्रेष्ठ साधन बताया गया है। धार्मिक मान्यता के अनुसार वामन अवतार में राजा बलि को वरदान मिला था कि कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी यानी धनतेरस से अमावस्या यानी दीपावली तक तीन दिन पृथ्वी पर उनका राज्य रहेगा। इन दिनों यम के लिए दीपदान करने वाले को यम यातना से मुक्ति तथा उसके घर में लक्ष्मी के स्थायी वास की धार्मिक मान्यता है।

मंदिर से लेकर गोशाला तक दीपदान का महत्व

आचार्य मनीष निर्मल शास्त्री ने बताया कि धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मंदिर, तुलसी के पौधे के पास, पीपल व बेल वृक्ष के नीचे, नदी किनारे, गोशाला, चौराहे, श्मशान और अंधेरे रास्तों पर दीपदान करना शुभ माना गया है। कार्तिक मास में घी अथवा तिल के तेल का दीपक विशेष शुभ माना जाता है। दीपक को सीधे जमीन पर रखने के बजाय नीचे चावल या गेहूं का आसन देने की परंपरा है। आचार्य ने बताया कि जो व्यक्ति स्वयं दीपदान करने में सक्षम नहीं है, वह दूसरों के बुझे हुए दीप जला सकता है अथवा हवा से जलते दीपों की रक्षा कर सकता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार इससे भी दीपदान का पुण्य प्राप्त होता है।

राव जयराम स्कूल की छात्रा बनी लेफ्टिनेंट

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

राव जयराम सीनियर सेकेंडरी स्कूल की प्रतिभाशाली छात्रा साक्षी ने भारतीय सेना में चिकित्सा अधिकारी के रूप में लेफ्टिनेंट पद पर चयनित होकर अपने परिवार, विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। साक्षी के पिता संदेश गांव लावण के निवासी हैं। उनकी इस उपलब्धि से परिवारजनों, ग्रामीणों और विद्यालय परिवार में खुशी का माहौल है। साक्षी की सफलता मेहनत, अनुशासन, समर्पण और दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रेरणादायक उदाहरण है।



भारतीय सेना में चिकित्सा अधिकारी के रूप में सेवाएं देना गौरव की बात है। इस पद पर रहते हुए चिकित्सा अधिकारियों को सैनिकों के स्वास्थ्य की देखभाल और उन्हें आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाने जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभानी होती हैं।

राव जय राम सीनियर सेकेंडरी स्कूल के लिए साक्षी की यह उपलब्धि गर्व का विषय है। किसी भी शिक्षण संस्थान की पहचान उसके विद्यार्थियों की सफलता और उनके जीवन में हासिल की गई उपलब्धियों से बनती है।

जिलास्तरीय बाल-महोत्सव के चौथे दिन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की धूम

30 स्कूलों के 450 छात्रों ने सोलो डांस और राष्ट्रीय समूह गान में दिखाया हुनर

- विजेता प्रतिभागियों को 14 नवंबर को जिला स्तरीय बाल दिवस व पारितोषिक वितरण समारोह में डीसी करेंगी सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल





नारनौल। कार्यक्रम में प्रस्तुति देती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

उपायुक्त एवं जिला बाल कल्याण परिषद की अध्यक्षा अनुपमा अंजली के मार्गदर्शन में बाल भवन में आठ दिवसीय जिला स्तरीय बाल-महोत्सव प्रतियोगिताओं की श्रृंखला के चौथे दिन शनिवार को विभिन्न स्कूली बच्चों के लिए क्लासिकल सोलो डांस द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ ग्रुप तथा राष्ट्रीय समूह गान द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ ग्रुप प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला बाल कल्याण अधिकारी राजेन्द्र सिंह ने किया।

आज आयोजित की गई विविध प्रतियोगिताओं में जिलेभर के कुल 30 विद्यालयों से आए 450 छात्र-छात्राओं ने पूरे उत्साह और जोश के साथ भाग लिया। जिला बाल कल्याण अधिकारी राजेन्द्र सिंह ने बताया कि इन प्रतियोगिताओं के प्रतिभाशाली बच्चे आगे मंडल स्तर (डिविजनल लेवल) की प्रतियोगिताओं में जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे। उन्होंने कहा कि बाल-महोत्सव की समस्त प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को आगामी 14 नवंबर को आयोजित होने वाले जिला स्तरीय बाल दिवस एवं पारितोषिक वितरण समारोह में उपायुक्त द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 27 अक्टूबर को स्कूली विद्यार्थियों के लिए इंग्लिश व हिंदी हैंडराइटिंग प्रथम व द्वितीय ग्रुप तथा वन एक्ट प्ले/थिएटर प्ले चतुर्थ ग्रुप प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। मंच संचालन हिंदी प्रवक्ता डॉ. पंकज गौड़, जिला बाल कल्याण परिषद के कार्यक्रम अधिकारी विवेक कुमार व लिपिक सुरेंद्र शर्मा ने किया।

इस मौके पर पूर्व जिला बाल कल्याण अधिकारी विपिन कुमार शर्मा, आचार्य बजरंग शास्त्री, डॉ. पंकज गौड़, रामबिलास उपस्थित रहे। राष्ट्रीय समूह गान में पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के डॉ. ललित कुमार व ललित सैनी ने निर्णायक की भूमिका निभाई। क्लासिकल सोलो डांस में राजकीय आरोही मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मंढाणा की संगीत प्रवक्ता डॉ. कुसुम लता व राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय महेंद्रगढ़ की सेवानिवृत्त संगीत प्रवक्ता वंदना शर्मा निर्णायक मंडल में शामिल रही।



प्रतियोगिताओं के परिणाम

क्लासिकल सोलो डांस द्वितीय ग्रुप में आरआरसीएम पब्लिक स्कूल कनीना की वर्षा प्रथम, आरपीएस सीनियर सेकेंडरी स्कूल महेंद्रगढ़ की शगुन द्वितीय, सूरज सीनियर सेकेंडरी स्कूल महेंद्रगढ़ की दिशा व सीएल पब्लिक स्कूल नारनौल की मनसिका संयुक्त रूप से तृतीय स्थान रही। हैप्पी एवरग्रीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल महेंद्रगढ़ की रिया सांत्वना प्रथम, आरपीएस स्कूल नारनौल की भाविका सुरेलिया सांत्वना द्वितीय रही। इसी प्रकार क्लासिकल सोलो डांस तृतीय ग्रुप में आरआरसीएम स्कूल कनीना की अशमी प्रथम, आरपीएस स्कूल महेंद्रगढ़ की दिवाक्षी द्वितीय, सूरज स्कूल महेंद्रगढ़ की पलक तृतीय स्थान पर रही। यदुवंशी शिक्षा निकेतन सतनाली की अवनी सांत्वना प्रथम, हैप्पी एवरग्रीन स्कूल महेंद्रगढ़ की सृष्टि सांत्वना द्वितीय रही। राष्ट्रीय समूह गान द्वितीय ग्रुप में आरपीएस स्कूल महेंद्रगढ़ की टीम प्रथम, सूरज स्कूल नारनौल की टीम द्वितीय, आरपीएस स्कूल नारनौल व एमएएसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल नारनौल की टीम संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रही। यूरेका स्कूल की टीम सांत्वना प्रथम, भारती स्कूल की टीम सांत्वना द्वितीय स्थान पर रही।

राजवंशी स्कूल में किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

विश्व पोलियो दिवस के अवसर पर रोटरी क्लब ऑफ नारनौल रॉयल्स की ओर से राजवंशी सीनियर सेकेंडरी स्कूल दोचाना में मिशन जीरो पोलियो के अंतर्गत पोस्टर मेकिंग व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में पोलियो उन्मूलन के प्रति जागरूकता बढ़ाना, उनकी रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करना तथा समाज को पोलियो मुक्त विश्व के संकल्प से जोड़ना रहा। रोटरी क्लब ऑफ रॉयल्स की ओर से पोस्टर मेकिंग व भाषण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। क्लब प्रधान रोटेरियन दिनेश भार्गव ने कहा कि पोलियो उन्मूलन केवल एक स्वास्थ्य अभियान नहीं, बल्कि प्रत्येक बच्चे को सुरक्षित भविष्य देने का हमारा सामूहिक संकल्प है। दुनिया को पोलियो मुक्त बनाने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, लेकिन हमारी जिम्मेदारी अभी समाप्त नहीं हुई है। प्राचार्य दिनेश सांखला ने रोटरी क्लब के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि बच्चों को जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाना भी है।



नारनौल। विद्यार्थी व क्लब सदस्य। फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस मौके पर क्लब वाइस प्रेसिडेंट रोटेरियन अनिल कुमार यादव, वाइस प्रिंसिपल, क्लब के कोषाध्यक्ष रोटेरियन मोहन सैनी, क्लब के वरिष्ठ सदस्य रोटेरियन विनय जैन उपस्थित रहे।

आरपीएस डिग्री कॉलेज में इंटीग्रल समीकरणों के अनुप्रयोग पर व्याख्यान

महेंद्रगढ़। आरपीएस डिग्री कॉलेज बलाना के गणित विभाग द्वारा छात्रों के अकादमिक संवर्धन और गणितीय अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान के उद्देश्य से एक विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. दिनेश कुमार मदान अध्यक्ष, गणित विभाग, अधिष्ठाता, इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी संकाय; निदेशक, आईक्यूएसी, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय भिवानी उपस्थित रहे। उन्होंने कैलकुलस और इंटीग्रल समीकरणों के अनुप्रयोग विषय पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। संस्था चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव एवं सीईओ इंजी. मनीष राव ने कहा कि गणित केवल एक विषय नहीं बल्कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास की रीढ़ है। कुलसचिव डॉ. देवेंद्र यादव तथा निदेशक डॉ. महेश यादव ने कहा कि उच्च शिक्षा में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ उसके प्रायोगिक और वास्तविक दुनिया में उपयोग को समझना बेहद आवश्यक है। प्राचार्य डॉ. देवेंद्र सिंह कादियान ने कहा कि आज के दौर में गणितीय कौशल की मांग हर क्षेत्र में बढ़ रही है। गणित विभागाध्यक्षा डॉ. स्मिता, गणित विभाग के प्राध्यापकगण डॉ. हंसराज, डॉ. मंजीत, डॉ. दुष्यंत, डॉ. राकेश, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. नवीन एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

एमआर स्कूल के छात्र-छात्राओं को स्काउट-गाइड प्रमाण पत्र वितरित



नारनौल। एमआर पब्लिक स्कूल मित्रपुरा में स्काउट एवं गाइड के विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रमाण-पत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कुल 475 स्काउट एवं गाइड प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। प्रमाण-पत्र प्राप्त करने पर विद्यार्थियों में उत्साह और खुशी का माहौल देखने को मिला। चेयरमैन सियाराम यादव ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि स्काउट एवं गाइड जैसी गतिविधियां विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता और समाजसेवा की भावना विकसित करती हैं। प्रधानाचार्या अनीता यादव ने कहा कि 475 प्रमाण-पत्रों का वितरण विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और उनके प्रयासों को प्रोत्साहित करने वाला महत्वपूर्ण अवसर है। विद्यालय प्रबंधन ने सभी प्रमाण-पत्र प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

खबर संक्षेप

शरद पूर्णिमा पर बंटेगा खीर का प्रसाद

महेंद्रगढ़। श्री गोशाला धौलपोश आश्रम सैनीपुरा में रविवार शरद पूर्णिमा पर खीर का प्रसाद वितरण रात्रि 12:00 बजे के बाद किया जाएगा इसके साथ-साथ श्वास, कास एवं दमा से संबंधित परेशानी के लिए निःशुल्क औषधि भी उपलब्ध करवाई जाती है। इस सेवा का लाभ प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में जरूरतमंद लोग उठाते हैं। श्री गोशाला धौलपोश आश्रम के सदस्यों का कहना है कि जो व्यक्ति श्वास, कास एवं दमा संबंधी परेशानी के लिए निःशुल्क औषधि प्राप्त करना चाहते हैं, वे समय रहते अपना पंजीकरण करवा लें, ताकि आवश्यक व्यवस्था सुचारु रूप से की जा सके। पंजीकरण एवं अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

मॉडर्न स्कूल विद्यार्थियों ने किया खालड़ा वाले हनुमान मंदिर का शैक्षणिक भ्रमण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल चामधेड़ा रोड तथा मॉडर्न किड्स प्ले स्कूल के प्राइमरी विंग के 218 विद्यार्थियों का एक दल शनिवार को नारनौल स्थित खालड़ा वाले हनुमान मंदिर में शैक्षणिक भ्रमण पर गया। विद्यालय प्राचार्य प्रदीप कुमार तंवर ने बताया कि भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों की जानकारी देना तथा उनमें भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रति सम्मान की भावना विकसित करना था।

मंदिर पहुंचकर विद्यार्थियों ने श्रद्धापूर्वक दर्शन किए और वहां के धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण का अनुभव किया। इस दौरान मॉडर्न किड्स प्ले स्कूल की हेड शर्मिला, प्रियंका, सीमा, रीमा, बबीता, हेमलता, कृष्णा, आशा के साथ-साथ मॉडर्न स्कूल से भूपेंद्र सैनी, राकेश, विनोद सैनी, दिनेश सैनी, अनिता, अंजू और सीमा ने विद्यार्थियों के साथ रहकर भ्रमण को व्यवस्थित बनाने में सहयोग दिया। प्राचार्य प्रदीप तंवर और चेयरमैन सतन सिंह ने इस प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियों को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया।



महेंद्रगढ़। भ्रमण करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हिंदी व्याकरण स्पर्धा में रिंकू व शबनम की टीम अव्वल

- राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल ढाढ़ोत में प्रतियोगिता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल ढाढ़ोत में शनिवार को हिंदी व्याकरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में सीनियर विंग के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी भाषाई प्रतिभा, ज्ञान एवं योग्यता का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के बारे में जानकारी देते हुए गणित प्रवक्ता सतन सिंह ने बताया कि उक्त प्रतियोगिता कक्षा दसवीं व 12वीं के विद्यार्थियों के बीच करवाई गई। प्रतियोगिता से पूर्व सभी विद्यार्थियों का एक लिखित टेस्ट लिया गया। जिसमें चयनित प्रतिभागियों में चारों हाउस से दो-दो टीम बनाई गई। प्रतियोगिता का आयोजन पांच राउंड में किया गया। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता के आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाना तथा व्याकरण संबंधी ज्ञान को विकसित करना था। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों से हिंदी व्याकरण से जुड़े विभिन्न प्रश्न पूछे गए। प्रतिभागियों ने और अपनी प्रतिभा का उत्साहपूर्वक प्रश्नों के उत्तर दिए परिचय दिया।



महेंद्रगढ़। बच्चों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

ये रहे विजेता

प्रतियोगिता में रिंकू व शबनम की टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं करीना, खुशी, वंशिका व दक्ष की टीम संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान पर रही। प्राचार्य अजीत सिंह ने कहा कि इस प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियां विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

संत नामदेव का प्रथम वार्षिक उत्सव आज

मंडी अटेली। संत श्री नामदेव समाज समिति अटेली मंडी की ओर से आज 25 अक्टूबर रविवार को प्रथम संत नामदेव जन्मोत्सव वार्षिक उत्सव समारोह का आयोजन किया जाएगा। समारोह में समाज के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों व 80 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बुजुर्गों को सम्मानित किया जाएगा। समिति के मीडिया प्रभारी राकेश पेंटर ने बताया कि समिति के प्रधान विजय पाल रोहिल्ला व अटेली समिति के पदाधिकारियों की देखरेख में होने वाले वैभव रिसोर्ट में मुख्य अतिथि नीलंठ गुरप गुरुग्राम के डायरेक्टर गुरुग्राम के सुनील वर्मा अध्यक्षता जिला सुभाष चंद वर्मा करेंगे। विशिष्ट अतिथि पूना के बिजेंद्र मेहताप रोहिल्ला रहेंगे।

युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति किया जागरूक

नशामुक्त युवा, विकसित भारत विषय पर पड़ोस युवा संसद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के तहत माय भारत महेंद्रगढ़ की ओर से युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने तथा नशा मुक्त भारत के निर्माण में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से नशा मुक्त युवा, विकसित भारत विषय पर पड़ोस युवा संसद कार्यक्रम का आयोजन बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय नांगल चौधरी में किया गया। प्राचार्य डॉ. अनीता तंवर ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया।

उन्होंने युवाओं को संबोधित करते हुए इस प्रकार की जागरूकता एवं सहभागिता आधारित गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि युवाओं की सक्रिय भागीदारी से ही नशा मुक्त समाज के निर्माण की दिशा में सार्थक प्रयास किए जा सकते हैं।

प्रोफेसर सुषमा यादव ने नशे के कारणों, दुष्प्रभावों तथा व्यक्ति, परिवार एवं समाज पर पड़ने वाले इसके गंभीर प्रभावों के बारे में बताया। उन्होंने युवाओं को नशे से दूर रहने, सकारात्मक सोच अपनाने और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया। डॉ. मनोज कुमार ने समूह चर्चा, प्रश्नोत्तरी, उदाहरण आधारित अध्ययन, भूमिका-अभिनय तथा अन्य सहभागितापूर्ण गतिविधियों के माध्यम से युवाओं को नशा मुक्ति के प्रति जागरूक किया। जिला युवा अधिकारी नित्यानंद यादव ने माय भारत पोर्टल पर संचालित विभिन्न गतिविधियों एवं युवाओं के लिए उपलब्ध अवसरों की जानकारी दी।



नारनौल। नशा मुक्ति की शपथ दिलाती प्राचार्य डॉ. अनीता तंवर व जिला युवा अधिकारी नित्यानंद यादव। फोटो : हरिभूमि

युवाओं को नशा मुक्ति की शपथ दिलाई

युवा इस पोर्टल के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता को विकसित कर सकते हैं। उन्होंने विशेष रूप से विकसित भारत युवा संसद 2026-27 के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि 18 से 25 वर्ष की आयु के युवा एक राष्ट्र, एक चुनाव विषय पर आयोजित युवा संसद में भाग ले सकते हैं। समापन पर उपस्थित युवाओं को नशा मुक्ति की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम के सफल आयोजन में राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक राहुल, अमित व बृजेश का योगदान रहा।

रक्तदान शिविर व क्रिकेट स्पर्धा 1 व 2 को

नारनौल। गांव नांगल काठा में स्वर्गीय अर्जित दहिया की दूसरी पुण्यतिथि के अवसर पर एक और दो नवंबर को श्रद्धांजलि सभा, रक्तदान शिविर और क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। अर्जित दहिया सद्भावना फाउंडेशन की ओर से आयोजित इन कार्यक्रमों में 1 नवंबर को सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक रक्तदान शिविर लगाया जाएगा। इस दौरान श्रद्धांजलि सभा भी होगी। इसके अगले दिन 2 नवंबर को गांव नांगल काठा के खेल परिसर में अर्जित दहिया ट्रॉफी क्रिकेट प्रतियोगिता करवाई जाएगी। प्रतियोगिता में कुल 64 टीमों की प्रविष्टियां रखी गई हैं। प्रथम पुरस्कार 71 हजार रुपये, द्वितीय पुरस्कार 31 हजार रुपये, तृतीय पुरस्कार 11 हजार रुपये और चतुर्थ पुरस्कार 5100 रुपये रखा गया है।

नीलामी सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला सीहमा 15197 खंड अटेली जिला महेंद्रगढ़ के जर्जर भवन के तीन कमरे बरामदे सहित व तीन कमरों के सामने का केवल बरामदा की खुली बोली द्वारा नीलामी शुक्रवार दिनांक 30 अक्टूबर 2026 प्रातः 11:00 बजे स्कूल प्रांगण में की जाएगी। प्रत्येक बोली दाता को धरोहर के रूप में ₹10000 स्कूल मुखिया के पास बोली से पहले जमा करवाने होंगे। सर्वोच्च बोली दाता को नीलामी का 50% उसी दिन जमा करवाना होगा। बोली की अन्य शर्तें मौके पर बताई जाएगी। स्कूल कमेटी का फैसला अंतिम होगा।

नोट - स्कूल के अन्य क्षतिग्रस्त /अनुपयोगी (कबाड़) सामान की बोली भी इसी दिन लगाई जाएगी।

Sd/-SMC
राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला सीहमा।



पुरानी कचहरी व महता चौक के बूस्टर तक पर्याप्त पानी पहुंचाने के लिए विभाग सख्त

जमालपुर मोहल्ले में जनस्वास्थ्य विभाग की कार्रवाई मेन लाइन से 100 से अधिक अवैध कनेक्शन हटाए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की ओर से शहरवासियों को सुचारू एवं पर्याप्त पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जमालपुर मोहल्ले में बड़ी कार्रवाई करते हुए मुख्य पेयजल पाइपलाइन (मेन लाइन) से 100 से अधिक अवैध कनेक्शन हटाए गए। विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर इन कनेक्शनों को हटाने की कार्रवाई की। इस दौरान कनिष्ठ अभियंता नरेश चंदेला, अभिषेक तंवर, बीआरसी इंद्रजीत तथा फिटर महिपाल सहित विभागीय टीम मौजूद रही।

गौरतलब है कि दो दिन पूर्व उपमंडल अभियंता मुकेश कुमार शर्मा पुलिस प्रशासन के साथ जमालपुर मोहल्ले में मुख्य पेयजल लाइन से अवैध कनेक्शन हटवाने पहुंचे थे। उस दौरान मोहल्लावासियों ने स्वयं अपने अवैध कनेक्शन हटाने के लिए दो दिन का समय मांगा था और आश्वासन दिया था कि वे निर्धारित समय में इन्हें हटा लेंगे। हालांकि, निर्धारित समय बीतने के बाद भी कनेक्शन नहीं हटाए गए। इसके बाद विभाग ने सख्त रूख अपनाते हुए आज यह कार्रवाई की।

अवैध कनेक्शन मिले, होगी कार्रवाई: नरेश चंदेला

कनिष्ठ अभियंता नरेश चंदेला ने कहा कि जमालपुर मोहल्ले में की गई कार्रवाई महज शुरूआत है। शहर में जहां भी मुख्य पेयजल पाइप लाइन से अवैध कनेक्शन लिए गए हैं अथवा नियमों के विरुद्ध एक से अधिक कनेक्शन पाए जाते हैं, उन्हें चिन्हित कर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि विभाग इस अभियान को लगातार जारी रखेगा और पेयजल आपूर्ति में बाधा उत्पन्न करने वाले अवैध कनेक्शनों को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की प्राथमिकता प्रत्येक नागरिक तक पर्याप्त एवं सुचारू पेयजल पहुंचाना है। इसके लिए पेयजल वितरण व्यवस्था को बाधित करने वाले अवैध कनेक्शनों को हटाना आवश्यक है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे अपने पेयजल कनेक्शन नियमानुसार रखें और मुख्य पाइप लाइन से अवैध कनेक्शन लेने से बचें। विभागीय कार्य में बाधा उत्पन्न करने वालों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। विभाग ने स्पष्ट किया कि शहर में पेयजल आपूर्ति व्यवस्था को बेहतर बनाने तथा प्रत्येक क्षेत्र तक पानी की समान रूप से उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए अवैध कनेक्शनों के विरुद्ध अभियान आगे भी जारी रहेगा।

अवैध कनेक्शनों से पेयजल आपूर्ति हो रही प्रभावित

पिछले कुछ दिनों से पुरानी कचहरी और महता चौक स्थित बूस्टरों में पर्याप्त पानी नहीं पहुंचने के कारण क्षेत्रवासियों को पेयजल समस्या का सामना करना पड़ रहा था। विभाग को इस संबंध में लगातार शिकायतें मिल रही थी। जांच में मुख्य पेयजल लाइन पर अवैध कनेक्शन होने के कारण जलापूर्ति प्रभावित होने की समस्या सामने आई। इसे देखते हुए विभाग ने अवैध कनेक्शन हटाने के लिए अभियान शुरू किया है, ताकि मुख्य पाइपलाइन के माध्यम से पानी की आपूर्ति सुचारू रूप से सुनिश्चित की जा सके।

पाइप जलाने पर पुलिस कार्रवाई नहीं करने से किसानों ने जताया रोष

महेंद्रगढ़। गांव कुरहावटा निवासी एक किसान के खेत में रात को सिंचाई के लिए लगाए पाइप जल गए। किसान ने पास स्थित कंपनी की लेबर पर खेत किनारे कूड़ा जलाने और कंपनी प्रबंधक पर बदसलूकी का आरोप लगाया है। इस संबंध में उन्होंने महेंद्रगढ़ सदर पुलिस थाने में शिकायत दी है। पीड़ित सोमबीर ने बताया कि 19 अक्टूबर को वह अपने खेत में पानी देने गए थे। जब वे खेत पहुंचे तो दो एकड़ जमीन में लगाए सिंचाई पाइप जलकर नष्ट हो चुके थे। इनमें एक पाइप की लंबाई 200 फीट थी और किसान के 400 फीट लंबे पाइप जलकर राख हो गए। उनका कहना है कि खेत के पास स्टार वायर इंडिया लिमिटेड नामक कंपनी है। आरोप है कि कंपनी ने अपने कचरे में आग लगाई, जिससे आग सोमबीर के खेत तक फैल गई। इस आग से पाइपों के साथ-साथ खेत में पड़ा अन्य सामान भी जल गया, जिससे नुकसान हुआ है।

खबर संक्षेप

राजकीय विद्यालय कोरियावास में मनाया संयुक्त राष्ट्र दिवस

नारनौल। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोरियावास में गुरुवार को संयुक्त राष्ट्र दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त प्राध्यापक धर्मपाल शर्मा मुख्य अतिथि रहे, जबकि अध्यक्षता विद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य सुरेंद्र कुमार यादव ने की। मंच संचालन संजय शर्मा ने किया। मुख्य अतिथि धर्मपाल शर्मा ने विद्यार्थियों को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की पृष्ठभूमि और उसके उद्देश्यों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में हुए व्यापक जन-धन के नुकसान तथा हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराए जाने के बाद विश्व में शांति और सुरक्षा की आवश्यकता और अधिक महसूस हुई। इसी उद्देश्य से 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई।

राजकीय महाविद्यालय में किया जागरूक

महेंद्रगढ़। राजकीय महाविद्यालय में महिला अध्ययन एवं विकास प्रकोष्ठ के तत्वावधान में बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करने के उद्देश्य से एक जागरूकता कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को बाल विवाह के दुष्परिणामों, बच्चों के भविष्य पर इसके प्रभाव तथा समाज में इसके उन्मूलन के महत्व के बारे में जानकारी दी गई। प्राचार्य डॉ. बलजीत सिंह ने कहा कि बाल विवाह एक गंभीर सामाजिक बुराई है, जो बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और भविष्य को प्रभावित करती है।

किसानों से निर्धारित तारीख पर ही बाजरा लेकर मंडी पहुंचने की अपील

2487 रुपये क्विंटल बिका बाजरा छह दिन का खरीद शेड्यूल जारी

शनिवार को मंडी में 264 गेट पास काटे गए और 6931 क्विंटल बाजरे की आवक दर्ज की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नई अनाज मंडी में बाजरे की खरीद जारी है। शनिवार को मंडी में बाजरे का अधिकतम भाव 2487 रुपये प्रति क्विंटल रहा, जो नारनौल की छह मंडियों में सर्वाधिक बताया गया है। ऊंचा भाव मिलने से किसानों में खुशी है। इस बीच मार्केट कमेटी के चेयरमैन बाबूलाल यादव की ओर से 26 से 31 अक्टूबर तक बाजरे की खरीद का गांववार शेड्यूल जारी किया गया है। उन्होंने किसानों से अपने आधार कार्ड में दर्ज पते के अनुसार निर्धारित तारीख पर ही बाजरा लेकर मंडी पहुंचने की अपील की है। शनिवार को मंडी में 264 गेट पास काटे गए और 6931 क्विंटल बाजरे की आवक दर्ज की गई। मंडी में व्यापारियों की ओर से बाजरे की खरीद की जा रही है। सरकार की ओर से बाजरे का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित है, जबकि भावांतर योजना के तहत 600 रुपये प्रति क्विंटल की सहायता का प्रावधान बताया गया है। मंडी में 2487 रुपये प्रति क्विंटल तक भाव मिलने से किसानों को बेहतर दाम मिलने की उम्मीद है।

गांववार खरीद का शेड्यूल



मार्केट कमेटी की ओर से जारी कार्यक्रम के अनुसार 26 अक्टूबर को रघुनाथपुरा, रसूलपुर और रामपुरा गांवों के बाजरे की खरीद होगी। 27 अक्टूबर को शहरपुर, रामबास और सेका के किसान बाजरा लेकर आएंगे। 28 अक्टूबर को श्योनाथपुरा, सुराना, शाहपुर अव्वल (मांदी) और शाहपुर-द्वितीय के लिए खरीद निर्धारित की गई है। इसी प्रकार 29 अक्टूबर को टहला और ताजीपुर, 30 अक्टूबर को तलोट, थाना, शोभापुर और सलूनी तथा 31 अक्टूबर को ताजपुर, सीहमा और सिलारपुर मैहता गांवों के किसानों की फसल खरीदी जाएगी।

पंजीकृत किसानों से होगी खरीद

चेयरमैन बाबूलाल यादव ने कहा कि किसान निर्धारित शेड्यूल के अनुसार अपनी फसल मंडी में लेकर आएं। बाजरे की खरीद पंजीकृत किसानों से ही की जाएगी। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे आधार कार्ड में दर्ज पते के अनुसार अपने गांव की निर्धारित तारीख का ध्यान रखें, ताकि मंडी में अनावश्यक भीड़ और परेशानी से बचा जा सके।बाजरे की खरीद का कार्यक्रम

तारीख	गांव
26 अक्टूबर	: रघुनाथपुरा, रसूलपुर, रामपुरा
27 अक्टूबर	: शहरपुर, रामबास, सेका
28 अक्टूबर : शाहपुर-द्वितीय	श्योनाथपुरा, सुराना, शाहपुर अव्वल (मांदी),
29 अक्टूबर	: टहला, ताजीपुर
30 अक्टूबर	: तलोट, थाना, शोभापुर, सलूनी
31 अक्टूबर	: ताजपुर, सीहमा, सिलारपुर मेहता

अटेली मंडी में बाजरा खरीद का नया रोस्टर जारी

मंडी अटेली। नई अनाज मंडी अटेली में बाजरे की सरकारी खरीद सुचारू रूप से करवाने के लिए मार्केट कमेटी ने तीसरा गांव वाइज रोस्टर जारी किया है। इसके तहत 26 से 31 अक्टूबर तक अलग-अलग गांवों के किसानों की बाजरे की फसल निर्धारित तिथियों के अनुसार खरीदी जाएगी। बाजरे की सरकारी खरीद 15 नवंबर तक जारी रहेगी। अटेली मार्केट कमेटी चैयरमैन दिनेश जेलदार ने आश्वस्त किया है कि किसानों का एक-एक दाना खरीदा जाएगा। खरीद का समय सुबह आठ बजे से सायं पांच बजे तक निर्धारित किया गया है। अटेली मार्केट कमेटी की ओर से जारी रोस्टर के अनुसार कल 26 अक्टूबर को सुराणी, बिहाली, चन्दपुरा, खैराणी के किसान बाजरा लेकर मंडी पहुंचेंगे।



सरसों की बिजाई चरम पर, डीएपी के 1300 बैग बंटे, मंगलवार वितरण की संभावना

नारनौल। सरसों की बिजाई चरम पर है और इसी बीच डीएपी खाद लेने के लिए किसानों की भीड़ उमड़ रही है। रेलवे रोड स्थित अनाज मंडी के कोऑपरेटिव सोसायटी कार्यालय पर शनिवार को इफ्को के डीएपी खाद का वितरण किया गया। 21 अक्टूबर को पहुंचे 1300 बैग लेने के लिए पहुंचे किसानों ने स्टॉक खत्म कर दिया है। अब सोसायटी में मंगलवार को दोबारा खाद वितरण होने की संभावना है। खाद वितरण के दौरान एक किसान को अधिकतम तीन बैग दिए गए। कम जमीन वाले किसानों ने अपनी जरूरत के अनुसार एक या दो बैग भी खरीदे। प्रत्येक बैग 50 किलोग्राम का है, जिसकी कीमत 1350 रुपये है। सरकार की ओर से डीएपी पर सब्सिडी भी दी जाती है। सोसायटी कर्मचारियों ने आधार कार्ड के आधार पर किसानों को खाद वितरित किया। इससे पहले 12 अक्टूबर को भी सोसायटी में खाद वितरण शुरू किया गया था। उस दौरान दो दिन में ही डीएपी के 1000 बैग वितरित हो गए थे। शनिवार को खाद लेने पहुंचे किसानों की भीड़ के बीच निर्धारित स्टॉक खत्म होने तक वितरण जारी रहा। मंगलवार को फिर मिल सकती है खादसोसायटी मैनेजर सुनील चौधरी ने बताया कि आईपीएल कंपनी का रैक लगने की पूरी संभावना है। रविवार और वाल्मीकि जयंती के अवकाश के बाद मंगलवार को दोबारा खाद वितरण किए जाने की संभावना है। उल्लेखनीय है कि इन दिनों रबी सीजन में सरसों की बिजाई जोरों पर चल रही है। इसके बाद एक नवंबर से गेहूं की बिजाई भी शुरू हो जाएगी। ऐसे में किसानों को समय पर डीएपी खाद उपलब्ध होना जरूरी है, ताकि फसलों की बिजाई निर्धारित समय पर की जा सके।

न्यूज डायरी



सतनाली महिला हत्या मामला : गहन जांच के बाद आरोपित पवन कुमार गिरफ्तार

नारनौल। थाना सतनाली पुलिस ने गांव ढाणी कुम्हारान में महिला की हत्या के मामले का खुलासा करते हुए आरोपित पवन कुमार को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए विभिन्न पहलुओं पर गहनता से जांच की तथा साक्ष्यों के आधार पर आरोपित की पहचान कर उसे गांव ढाणी कुम्हारान से गिरफ्तार किया। पुलिस जांच के अनुसार आरोपित ने रात के समय महिला के सिर पर वार कर हत्या की वारदात को अंजाम दिया था। डीएसपी संजय कुमार ने बताया कि 10 अक्टूबर को थाना सतनाली पुलिस को गांव ढाणी कुम्हारान में एक महिला की हत्या होने की सूचना प्राप्त हुई थी। मृतका की पहचान शकुंतला निवासी गांव ढाणी कुम्हारान के रूप में हुई।



48वें अखिल भारतीय लेखांकन सम्मेलन के दूसरे दिन आईएए के पदाधिकारियों के चुनाव संपन्न

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित 48वें अखिल भारतीय लेखांकन सम्मेलन एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन शनिवार को इंडियन अकाउंटिंग एसोसिएशन (आईएए) के विभिन्न पदों के लिए चुनाव संपन्न हुए। इसके अतिरिक्त, विभिन्न तकनीकी सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों से आए शोधार्थियों एवं शिक्षाविदों ने लेखांकन, लेखा-परीक्षण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जीएसटी 2.0 तथा विकसित भारत 2047 में लेखांकन एवं वित्त की भूमिका सहित विभिन्न समसामयिक विषयों पर शोध-पत्र प्रस्तुत किए। सम्मेलन का आयोजन विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग, व्यवसाय एवं प्रबंधन अध्ययन विद्यापीठ तथा इंडियन अकाउंटिंग एसोसिएशन की दक्षिण हरियाणा शाखा के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। सम्मेलन के दूसरे दिन इंडियन अकाउंटिंग एसोसिएशन के सचिव, संयुक्त सचिव, कोषाध्यक्ष, संयुक्त कोषाध्यक्ष तथा मुख्य संपादक पदों के लिए चुनाव आयोजित किए गए।

विश्वास की आड़ में दरिंदगी: मदद के नाम पर नाबालिग से दुर्व्यवहार, आरोपित पर केस दर्ज

कनीना। मदद के नाम पर किसी का भरोसा जीतना और फिर उसी भरोसे की आड़ में घिनौनी हरकत करना समाज को झकझोर कर रख देता है। सिटी थाना क्षेत्र के एक गांव में सामने आया एक मामला समाज की इसी विकृत मानसिकता और मासूमों की असुरक्षा को उजागर करता है, जहां परिचित होने का ढोंग कर एक व्यक्ति ने नाबालिग के साथ हैवानियत की कोशिश की। पीड़िता की मां के अनुसार, वह एक घरेलू कामकाजी महिला हैं और अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए दुकानों पर साफ-सफाई का काम करती हैं। उसके पति से जान-पहचान के चलते आरोपित व्यक्ति का उनके घर आना-जाना था। उसने महिला की इच्छा के विरुद्ध गलत कार्य किया। इतना ही नहीं बीती 30 सितंबर की रात करीब साढ़े बारह बजे आरोपित चुपके से उनके कमरे पर आया और कमरे में सो रही उसकी 15 वर्षीय नाबालिग बेटी के साथ गलत व्यवहार करना शुरू कर दिया और उसके कपड़े फाड़ दिए।

ऑनलाइन तबादला नीति वापस ले सरकार मुख्यमंत्री आवास पर आज होगा विरोध

महेंद्रगढ़। बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी एसोसिएशन स्वास्थ्य विभाग में लागू की जा रही मॉडल ऑनलाइन ट्रांसफर पॉलिसी के पूर्ण विरोध में 25 अक्टूबर को मुख्यमंत्री आवास पर रोष प्रदर्शन करेंगा एवं ज्ञापन सौपते हुए एमपीएचडब्ल्यू वर्ग को मोटॉप प्रक्रिया से बाहर रखने के लिए अपील करेगा। एसोसिएशन की प्रदेश अध्यक्ष शर्मिला देवी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुकेश चौहान, महासचिव सहदेव सांगवान एवं प्रवक्ता संदीप कुंडू ने सरकार को दूसरा स्मरण पत्र भेजते हुए स्पष्ट किया है कि एमपीएचडब्ल्यू (महिला एवं पुरुष) वर्ग को इस पॉलिसी से पूरी तरह बाहर रखा जाए तथा रेशनलाइजेशन के नाम पर स्वास्थ्य विभाग में पद समाप्त करने की प्रक्रिया पर रोक लगाई जाए।



मंडी अटेली। रक्तदाताओं को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते हुए।

सलीमपुर में 30 यूनिट रक्त जरूरतमंदों के लिए जुटाया

मंडी अटेली। गांव सलीमपुर में बाबा निहालचंद सेवादल पटीकरा की ओर से रेडक्रॉस नारनौल के सहयोग से 26वां रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के निजी सचिव गोविंद गोस्वामी एवं विशिष्ट अतिथि सिहमा पंचायत समिति के चेयरमैन प्रतिनिधि राजकुमार यादव रहे। शिविर में रक्तदाताओं ने उत्साह के साथ भाग लेते हुए 30 यूनिट रक्तदान किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि गोविंद गोस्वामी ने कहा कि रक्तदान महादान है और इससे जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त उपलब्ध कराकर उनकी जान बचाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को रक्तदान के लिए आगे आना चाहिए। रक्तदान करने से समाज में सेवा और सहयोग की भावना मजबूत होती है।शिविर के दौरान रक्तदाताओं को बैज लगाकर और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। सरपंच कुमारी आरती यादव ने रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रक्तदान मानवता की सच्ची सेवा है। रक्त की जरूरत किसी भी व्यक्ति को कभी भी पड़ सकती है। ऐसे में रक्तदाताओं का योगदान जरूरतमंद मरीजों के लिए जीवनदायी साबित होता है। उन्होंने कहा कि युवाओं को रक्तदान के प्रति जागरूक होकर आगे आना चाहिए और समाज के अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए। इस मौके पर डॉ. नरेंद्र, सरपंच प्रतिनिधि जसवंत मास्टर, अरविंद, रामनिवास, रवि, रतनलाल, जयसिंह, सुनील तथा रेडक्रॉस से नूर और संदीप सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

चुनाव आयुक्त के इस्तीफे की मांग को लेकर कांग्रेस का प्रदर्शन



नारनौल। प्रदर्शन करते कांग्रेस कार्यकर्ता। फोटो: हरिभूमि

नारनौल। ब्लॉक में कांग्रेस पार्टी की ओर से वोट बचाओ, देश बचाओ अभियान के तहत अधिवेशन आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर पैदल मार्च निकाला और विरोध प्रदर्शन करते हुए ज्ञानेश कुमार का पुतला दहन किया। इसी दौरान जिला अध्यक्ष सत्यवीर यादव झूकिया, किसान कांग्रेस के राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर कृष्ण राव, एससी सेल जिला अध्यक्ष तोताराम कोहली, महिला जिला अध्यक्ष डॉ. राजवती, अटेली ब्लॉक अध्यक्ष सुमेर सिंह यादव, नांगल चौधरी ब्लॉक अध्यक्ष राजकुमार तेजपाल यादव, प्रेम यादव, डॉ धीरज शर्मा, श्याम सुंदर आदि मौजूद थे।

सतनाली में आक्रोश मार्च निकाला

सतनाली मंडी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में वोट बचाओ, संविधान बचाओ, देश बचाओ अभियान के तहत सतनाली ब्लॉक का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सतनाली बिजली बोर्ड के सामने धरना-प्रदर्शन किया और इसके उपरांत आक्रोश मार्च निकाला तथा लोहारू चौक पर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का पुतला दहन कर केंद्र सरकार और चुनाव आयोग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। जिलाध्यक्ष सत्यवीर यादव, युवा नेता अरुण राव विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम सतनाली ब्लॉक अध्यक्ष रामरूप लांबा के नेतृत्व में आयोजित किया गया। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष डॉ. तरुण यादव, एससी प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष तोताराम कोहली, एससी प्रकोष्ठ के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट अनिल फांडन, जिला महासचिव विनोद शेखावत, जिला सचिव अनिल डागर आदि मौजूद रहे।

मुख्य चुनाव आयुक्त का पुतला फूंका

नांगल चौधरी। चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने अनाज मंडी में प्रदर्शन कर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ रोष जताया। कार्यकर्ताओं ने उनका पुतला जलाकर केंद्र सरकार और चुनाव आयोग के खिलाफ नारेबाजी की। आरोप लगाया कि एसआईआर की आड़ में चुनावी प्रक्रिया को प्रभावित किया जा रहा है। प्रदर्शन का नेतृत्व ब्लॉक प्रधान बिक्रम सिंह यादव ने किया, जिसमें जिला प्रधान सत्यबीर झूकिया मुख्य रूप से मौजूद रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डैंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295154800, 8295738500, 9253681005

डॉ. जेएस यादव की पुण्यतिथि पर हवन एवं श्रद्धांजलि समारोह मनाया

महर्षि दयानंद की विचारधारा को आगे बढ़ाने में निभाई भूमिका

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

प्रसिद्ध आर्य समाज विद्वान प्राचार्य मदन गोपाल ने कहा कि मृत्यु के पश्चात समाज में व्यक्ति के उन गुणों को याद किया जाता है, जो उसने निजी हित की अपेक्षा दूसरों के लिए किए हो। डॉ. यादव ने शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ समाजसेवा और महर्षि दयानंद की विचारधारा को आगे बढ़ाने में महत्ती भूमिका निभाई, इसीलिए उनको आदर और श्रद्धा के साथ याद किया जाता है। वे शुक्रवार को विश्व प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक डॉ. जेएस यादव की पुण्य तिथि के अवसर पर उनके पैतृक गांव नीरपुर में आयोजित हवन एवं श्रद्धांजलि समारोह में लोगों को सम्बोधित कर रहे थे।



नारनौल। गांव नीरपुर में आयोजित हवन में भाग लेते गणमान्य व्यक्ति।

उन्होंने कहा कि जीव विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. जेएस यादव के अनूठे शोध कार्यों व सैंकड़ों शोध-पत्रों को जहां अंतरराष्ट्रीय फलक पर सम्मान प्राप्त है। वहीं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उनके योगदान को आज भी पर्यावरण से जुड़े अनेक संगठन आगे बढ़ा रहे है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की विज्ञान संकाय के अलावा विभिन्न प्रकल्पों में उनके योगदान को आज भी सम्मान के साथ याद किया जाता है। पर्यावरण पर केंद्रित उनके संपादन में प्रकाशित होने वाली विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका जीवंती के दुर्लभ अंकों को आज भी शोध के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों तथा अन्य क्षेत्रों में उनके हजारों में में अनुयायी आज भी उनके आदर्शों को धरातल पर उतार रहे हैं। पूर्व सेशन जज राकेश यादव ने कहा कि डॉ. यादव ने अपने जीवन में शिक्षा प्राप्ति के बाद कुरूक्षेत्र को अपनी कर्मस्थली बनाया।

डॉ. यादव ने सामाजिक एकता को कायम रखते हुए कुरुक्षेत्र में योगेश्वर श्रीकृष्ण भवन का निर्माण करवाकर जातीय बंधनों पर कुठाराघात किया। उन्होंने कुरुक्षेत्र में 1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक राव तुलाराम की प्रतिमा स्थापित कर एक ऐतिहासिक कार्य किया। जजपा जिलाध्यक्ष राजकुमार खातौद ने कहा कि आज युवा वर्ग एवं सभी समाजसेवियों को डॉ. यादव का अपना प्रेरणा-स्त्रोत मानते हुए उनकी विचारधारा को आगे बढ़ाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। राव ओमप्रकाश इंजीनियर ने कहा कि डॉ. जेएस यादव ने जीवन भर शिक्षा का प्रचार और प्रसार किया।

यह रहे मौजूद

मौके पर मेजर जनरल अरविंद यादव, डॉ. अतुल यादव, असीम राव, कमला देवी, साहित्यकार रघुविंद्र यादव, प्रवक्ता योगेश यादव, डॉ. पवन यादव, कप्तान हरिसिंह, सूबेदार दयानंद, करतार मास्टर, गुलशन यादव, अनिल प्रधान, लालचंद यादव, राव समुंदर सिंह, अभय सिंह बोहरा, विष्णु सरपंच, विकास बड़कोदा, महिला कांग्रेस जिलाध्यक्ष डॉ. राजवती, दलीप सिंह चेयरमैन, रामकुआर, कप्तान बीरेंद्र सिंह, अशोक आर्किटेक्ट, पार्षद प्रतिनिधि सुमेर कांडा, महेंद्र सिंह, सज्जन पहलवान, बलराज कांवी, अनिल यादव, अनुज यादव आदि उपस्थित थे।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 25 अक्टूबर 2026

इन दिनों हर तरफ एलन मस्क की टेस्ला रोडस्टर कार को लेकर रॉकेट तकनीक और उड़ने की क्षमताओं से जुड़ी चर्चाएं हो रही हैं। रोडस्टर की प्रस्तावित उत्पादन समय सीमा 2028 बताई गई है। उड़ती हुई कारें निश्चित रूप से भविष्य के परिवहन का एक हिस्सा बन सकती हैं। लेकिन अभी इसे हकीकत बनने में कई सवालों और चुनौतियों का सामना करना होगा।

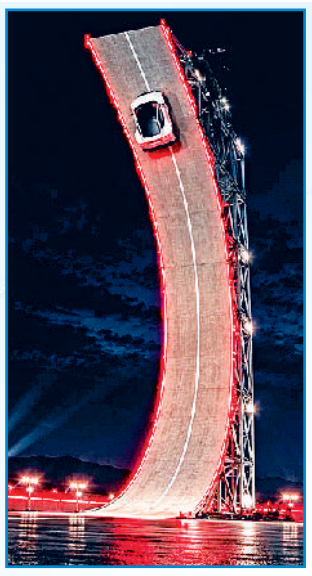



क्या सच होने वाला है उड़ती कार का सपना !

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

उड़ती हुई कारों का सपना अब केवल विज्ञान कथाओं, हॉलीवुड फिल्मों और भविष्य की कल्पनाओं तक सीमित नहीं है। गुजरे 15 अक्टूबर 2026 को टेक्सास में टेस्ला की ऐसी ही उड़न कार नई रोडस्टर के प्रदर्शन ने इस अनुमान को और मजबूत किया है। एलन मस्क की टेस्ला के अलावा भी दुनिया की कई कंपनियां ऐसी कारों के विकास में काफी हद तक सफल हो चुकी हैं या इसके नजदीक पहुंच चुकी हैं, जो सड़क पर कार की तरह चलने के बजाय हवा में उड़ सकेंगी। कहीं इन्हें फ्लाइंग कार कहा जा रहा है, कहीं इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ एंड लैंडिंग यानी ईवीटीओएल और कहीं एयर टैक्सी। लेकिन एक बुनियादी सवाल अब भी रह-रहकर जेहन में आ रहा है कि क्या हम सचमुच उड़ती हुई कारों के युग की दहलीज पर खड़े हैं या तकनीक की चमक ने भविष्य की तस्वीर को वास्तविकता से कहीं ज्यादा आकर्षक बना दिया है? इस बात को समझना होगा कि सड़क पर चलने वाली कार, रॉकेट से जुड़ा प्रदर्शन और यात्रियों को लेकर उड़ने वाला प्रमाणित विमान- तीनों अलग-अलग चीजें हैं। भविष्य की परिवहन क्रांति को समझने के लिए इस अंतर को ध्यान में रखना जरूरी है।



कई देशों में बन रही ईवीटीओएल



नीदरलैंड में निर्मित पाल-वी लिबर्टी कार

आसान नहीं सपने का सच होना

बीते 15 अक्टूबर 2026 को एलन मस्क ने स्पेसएक्स की तकनीक से जुड़े थ्रस्टरों की मदद से अमेरिका के टेक्सास में अपनी बहुचर्चित और बहुप्रतीक्षित टेस्ला की नई रोडस्टर कार को एक घुमावदार रैंप से हवा में उछलते, पलटते और जमीन पर उतरते दिखाया और अपनी सपनीली उड़न कार को लेकर असाधारण दावे भी किए हैं। इसके बाद से उड़न कार की चर्चाएं एक बार फिर से सुर्खियों में आ गई हैं। लेकिन उड़ान के जानकारों के मुताबिक इस प्रदर्शन को सामान्य अर्थों में उड़ने वाली कार का प्रमाण नहीं माना जा सकता। कुछ क्षण हवा में उछलना और नियंत्रित उड़ान भरकर यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना बिल्कुल अलग बात है। हालांकि इस घटना का महत्व फिर भी कम नहीं है। इसने एक बार फिर दिखाया कि सड़क परिवहन और एयरोस्पेस तकनीक के बीच की दूरी घटाने की महत्वाकांक्षा कितनी बड़ी हो चुकी है। मगर भविष्य की असली परीक्षा रोमांचक प्रदर्शन नहीं बल्कि सुरक्षा, उपयोगिता, लागत और नियामकीय मंजूरी होगी। साथ ही इसकी जोर-शोर से हो रही तैयारियों के बीच यह सवाल भी वाजिब है कि क्या हर कार को उड़ने की जरूरत होगी?

वास्तविकता को समझना होगा

फ्लाइंग कार से जुड़े सवालों का जवाब समझने के लिए पहले इसकी दो अलग अवधारणाओं को समझना होगा। पहली यह कि ऐसी कार, जो सड़क पर भी चल सके और जरूरत पड़ने पर उड़ भी सके। दूसरी है इलेक्ट्रिक एयर टैक्सी, जो सड़क पर चलने वाली कार नहीं बल्कि छोटी उड़ने वाली कार या मशीन है। इसे ही आमतौर पर ईवीटीओएल कहा जाता है यानी टैक्सी के रूप में एक विमान, जो बिजली से उड़ता हो और हेलीकॉप्टर की तरह सीधे ऊपर उठ सके और नीचे उतर सकता हो।

यह दूसरी अवधारणा फिलहाल ज्यादा व्यावहारिक दिखाई देती है। शहरों के बीच हर व्यक्ति की निजी उड़ने वाली कार की तुलना में हवाई अड्डे से शहर के केंद्र तक तेज परिवहन, महानगरों में सीमित दूरी की हवाई टैक्सी और आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं पहले उपयोगी साबित हो सकती हैं। इससे जमीन पर मौजूद सड़क नेटवर्क को हटाने के बजाय उसके ऊपर एक नया परिवहन विकल्प तैयार होगा। हमें यह समझना होगा कि महानगरों में यातायात की समस्या केवल सड़कों की कमी नहीं है। आबादी का घनत्व, गलत शहरी नियोजन, पार्किंग, सार्वजनिक परिवहन की अपर्याप्तता और यात्रा की बढ़ती मांग भी इसके कारण हैं। ऐसे में उड़ती हुई कारों को हर समस्या का समाधान मानना जल्दबाजी होगी। कल्पना करें दिल्ली, मुंबई या बंगलुरु में हजारों निजी उड़ने वाली कारें एक साथ आसमान में उतर आएं, तब सवाल होगा कि उन्हें उड़ने की अनुमति कौन देगा, उनके लिए हवाई गलियारे कैसे निर्धारित होंगे, दुर्घटना की स्थिति में जिम्मेदारी किसकी होगी और वे कहां उतरेंगी? यदि हर इमारत की छत पर लैंडिंग की व्यवस्था करनी पड़े, तो शहरी ढांचे को पूरी तरह बदलना होगा। इसके अलावा, बैटरी की क्षमता, उड़ान की दूरी, मौसम का प्रभाव, शोर, रखरखाव और यात्रियों की सुरक्षा भी बड़ी चुनौतियां हैं। कम दूरी की इलेक्ट्रिक उड़ान संभव बनाने वाली तकनीक अपने आप में यह गारंटी नहीं देती कि वह हर मौसम में सुरक्षित और किफायती सेवा दे सकेगी।



अमरिका में बनी जॉबी एविएशन का एस4

खत्म नहीं होंगे पारंपरिक वाहन

उड़न कारों के बारे में सोचते हुए एक यह सवाल भी जेहन में आता है कि क्या उड़ने वाली कारों के आने के बाद रेल, मेट्रो, बसें और सामान्य कारें अप्रासंगिक हो जाएंगी? इसकी संभावना बिल्कुल नहीं है, क्योंकि इतिहास गवाह है कि परिवहन के इतिहास में नए साधन पुराने साधनों को पूरी तरह समाप्त नहीं करते बल्कि उनकी भूमिका बदलते हैं। विमान आने के बाद रेल खत्म नहीं हुई, मेट्रो के विस्तार से बसों की जरूरत समाप्त नहीं हुई। उसी तरह उड़ने वाली कारें भी पहले उन यात्राओं में जगह बना सकती हैं, जहां समय की कीमत अधिक है और यात्रियों की संख्या सीमित है। मेट्रो और रेल बड़ी संख्या में यात्रियों को कम ऊर्जा और कम जगह में ले जाने में सक्षम हैं। बसें स्थानीय संपर्क प्रदान करती हैं, जबकि निजी कारें घर से गंतव्य तक लचीली यात्रा का विकल्प देती हैं।

भविष्य में ऐसा हो सकता है

एक यात्री घर से इलेक्ट्रिक कार में मेट्रो स्टेशन तक पहुंचे, लंबी दूरी ट्रेन से तय करें और अंतिम चरण में हवाई टैक्सी का इस्तेमाल करे, ऐसी एकीकृत व्यवस्था अधिक यथार्थवादी है। इस तरह उड़ती हुई कारों का भविष्य केवल इस बात से तय नहीं होगा कि कोई वाहन हवा में उठ सकता है या नहीं। असली प्रश्न यह होगा कि क्या वह आम आदमी की जरूरतों के अनुकूल सुरक्षित, विश्वसनीय, किफायती और पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर विकल्प बन सकता है। हालांकि, उस भविष्य में सबसे महत्वपूर्ण वाहन शायद वह नहीं होगा जो सबसे ऊंचा उड़ता है बल्कि वह होगा जो लोगों को सबसे सुरक्षित, सुलभ और कम खर्च में उनकी मंजिल तक पहुंचाता है। *



कई देशों में हो रहे प्रयास

भले आज अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन और नीदरलैंड सहित कई देशों में अलग-अलग तरह के उड़ने वाले वाहन विकसित हो रहे हों। अमेरिका में जॉबी एविएशन का एस4 और आर्चर एविएशन का मिडनाइट जैसे विमान हवाई टैक्सी के लिए तैयार किए जा रहे हैं। चीन की ईहैंग अपने ईएच216-एस जैसे बिना पायलट वाले यात्री विमान के कारण उल्लेखनीय बढ़त रखती है। जापान की स्काईड्राइव और चीन की एक्सपेंग एरॉएचटी सड़क और आसमान के बीच संबंध बनाने वाली अलग अवधारणाओं पर काम कर रही हैं। मगर यहां एक महत्वपूर्ण अंतर है। तकनीकी प्रोटोटाइप उड़ाना, विमान का नियामकीय प्रमाणन प्राप्त करना और नियमित व्यावसायिक यात्री सेवा शुरू करना तीन अलग-अलग पड़ाव हैं। चीन का ईएच216-एस प्रमाणन और सीमित सेवाओं के मामले में आगे है, जबकि अमेरिका में जॉबी जैसे खिलाड़ी पायलट वाले विमानों के प्रमाणन की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए किसी एक देश को सभी तरह की उड़ने वाली कारों का निर्विवाद विजेता कहना अभी सही नहीं होगा।

अब रोबोट करेंगे सर्जरी !

अभी तक इंसानी डॉक्टर की मदद से रोबोटिक सर्जरी हुआ करती थी। लेकिन अब इंसानी डॉक्टर से दूर रहकर रोबोटिक सर्जरी को अंजाम देने की दिशा में कदम आगे बढ़ गए हैं। यह देखना दिलचस्प होगा, आने वाले समय में मेडिकल साइंस में रोबोट की भूमिका और कितनी बढ़ती है?

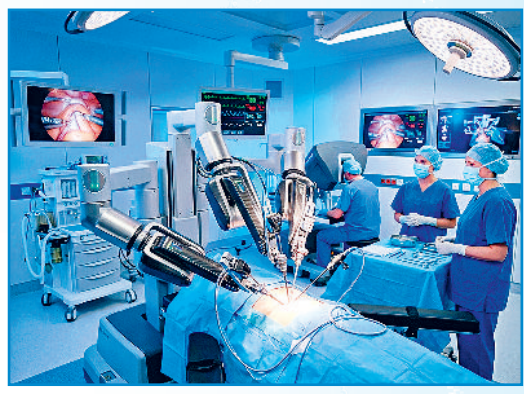

{ टेक्नोट्रीटमेंट / वीरेंद्र बहादुर सिंह }

मेडिकल क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और रोबोटिक्स का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। आज भारत में भी घुटने और कूल्हे के जॉइंट रिप्लेसमेंट से लेकर कई तरह की छोटी-बड़ी सर्जरी रोबोटिक तकनीक की मदद से की जाने लगी हैं। हालांकि इन ऑपरेशनों में रोबोट अपने आप सर्जरी नहीं करता। अनुभवी और कुशल डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रहते हैं और रोबोटिक उपकरणों की मदद से पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं। लेकिन अमेरिका में हाल ही में हुए एक प्रयोग ने भविष्य की मेडिकल सर्जरी की संभावनाओं को एक कदम और आगे बढ़ा दिया है।

दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने की सर्जरी: अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में एक ऐसा प्रयोग किया गया, जिसमें दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने एक जीवित मरीज पर सर्जरी की। इस दौरान गॉल-ब्लैडर यानी पित्ताशय को शरीर से अलग किया गया। ऑपरेशन में चीरा लगाना, लिवर से पित्ताशय को अलग करना और अंत में टांके लगाने जैसी प्रक्रियाएं रोबोट ने पूरी कीं।

यह दावा सुनने में बेहद रोमांचक है कि रोबोट ने स्वयं ऑपरेशन कर दिया, लेकिन इस प्रयोग की वास्तविकता को समझना जरूरी है। पहली बात यह कि मरीज इंसान नहीं, बल्कि एक पशु था। दूसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि प्रशिक्षित मानव डॉक्टर पूरी प्रक्रिया के दौरान मौजूद थे। वे ऑपरेशन थिएटर से दूर बैठकर टेली ऑपरेशन तकनीक के माध्यम से रोबोट को नियंत्रित कर रहे थे। फिर भी मेडिकल साइंस के लिए यह प्रयोग बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या भविष्य में ह्यूमनॉइड रोबोट डॉक्टर की प्रत्यक्ष मौजूदगी के बिना भी जटिल सर्जरी कर सकते हैं?

नॉर्मल रोबोट ने किया ऑपरेशन: इस प्रयोग की एक और खासियत थी। इसके लिए कोई विशेष सर्जिकल रोबोट तैयार नहीं किया गया था। इसके बजाय दो नॉर्मल ह्यूमनॉइड रोबोट का इस्तेमाल किया गया। इन रोबोट में कई तरह के जोड़ थे और उनके हाथों में अंगूठे तथा अंगुलियों जैसी कार्यक्षमता थी। इसलिए वे अपने हाथों में अलग-अलग सर्जिकल उपकरण पकड़कर उनका इस्तेमाल कर सकते थे। इनमें श्रीडी लाइडार और डेप्थ कैमरा जैसी तकनीक भी लगी थी। इससे रोबोट अपने सामने मौजूद वस्तुओं की स्थिति और गहराई को समझ सकते थे। यही क्षमता सर्जरी जैसे अत्यंत संवेदनशील काम में महत्वपूर्ण हो जाती है। यह प्रयोग इस बात का संकेत है कि भविष्य की सर्जरी में केवल रोबोटिक मशीनें ही नहीं, बल्कि एआई, कंप्यूटर विजन और रोबोटिक्स का संयुक्त इस्तेमाल निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

भारत में हो चुका है ऐसा प्रयोग: रोबोटिक सर्जरी की यह कहानी भारत के लिए पूरी तरह नई नहीं है। करीब आठ वर्ष पहले गुजरात में ऐसा प्रयोग हो चुका है, जिसमें डॉक्टर ने मरीज से कई किलोमीटर दूर बैठकर टेलीरोबोटिक तकनीक से सफलतापूर्वक हृदय की सर्जिकल प्रक्रिया की थी।

पद्मश्री से सम्मानित हृदय रोग विशेषज्ञ डा. तेजस पटेल ने 2018 में अहमदाबाद स्थित अस्पताल में भर्ती एक महिला मरीज के हृदय की प्रक्रिया को दूर बैठकर नियंत्रित किया था। उस समय डॉक्टर स्वयं अस्पताल से लगभग 30-32 किलोमीटर दूर गांधीनगर में थे। मरीज को कुछ दिन पहले ही हृदयाघात हुआ था। इसके बावजूद उसने दुनिया में इस तरह की पहली प्रक्रियाओं में से एक के लिए सहमति दी। यह प्रयोग इसलिए ऐतिहासिक था क्योंकि डॉक्टर और मरीज के बीच कई किलोमीटर की दूरी होने के बावजूद रोबोटिक सिस्टम और हाईस्पीड इंटरनेट की मदद से डॉक्टर मरीज की प्रक्रिया को नियंत्रित कर सके।



कैसे होती है टेलीरोबोटिक सर्जरी: इस तरह की रोबोटिक प्रणाली मुख्य रूप से तीन हिस्सों में काम करती है। पहला हिस्सा अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रोबोटिक आर्म होता है, जो कैथलैब जैसी व्यवस्था के साथ जुड़ा रहता है और मरीज के शरीर में वास्तविक प्रक्रिया करता है। दूसरे हिस्से में एक बदली जा सकने वाली कैसेट होती है। इसमें प्रक्रिया के लिए जरूरी क्लिनिकल सामग्री और उपकरण व्यवस्थित रहते हैं। तीसरा हिस्सा डॉक्टर के लिए बनी कॉकपिट जैसी व्यवस्था होती है। डॉक्टर इसमें बैठकर गेमिंग के जॉयस्टिक जैसे नियंत्रण उपकरणों की मदद से रोबोटिक आर्म को संचालित करता है।

सबसे खास बात यह है कि यह कॉकपिट, ऑपरेशन थिएटर से काफी दूर भी हो सकती है।

सवाल भी है बरकरार: रोबोटिक सर्जरी को लेकर अकसर यह सवाल उठता है कि क्या भविष्य में रोबोट, डॉक्टरों की जगह ले लेंगे? फिलहाल ऐसा कहना जल्दबाजी होगी। सर्जरी केवल हाथों की सटीक गतिविधियों का नाम नहीं है। मरीज की स्थिति को समझना, अचानक पैदा होने वाली जटिलताओं का आकलन करना, निर्णय लेना और किसी अप्रत्याशित परिस्थिति में तुरंत रणनीति बदलना, इन सबमें मानवीय विशेषज्ञता महत्वपूर्ण है।

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी उतना ही दिलचस्प है। अगर एआई रोबोट को देखने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता में लगातार बेहतर बनाता है और रोबोटिक तकनीक हाथों की अत्यंत सूक्ष्म गतिविधियों को अधिक सटीक बनाती है, तो डॉक्टर और रोबोट का यह गठजोड़ चिकित्सा क्षेत्र को पूरी तरह बदल सकता है। *



{ दोहे / केदार शर्मा }

पूर्ण चंद्रमा शरद का

दीप्त रजत-सी ओढ़नी, उजली पाखी रात।
पूर्ण चंद्र से शरद ऋतु, हंस-हंस करती बात।।
चटक चमक चक चांदनी, चंचल चित चकोर।
होले-होले हवा हंस, हुलराती हर ओर।।
षोडस अंशों युक्त है, मादकमय मुस्कान।
सम्मोहनमय मौन में, डूबा सकल जहान।।
कानन उपवन दमकते, नहा चांदनी संग।
नदी सरोवर बदलते, धवल वसन सम रंग।।
क्षीरसिंधु सुत क्षीर-सा, शीतलता सब ओर।
मंद-मंद मुस्कान में, मिला मधुर मन-मोर।।
पूर्ण चंद्रमा शरद का, बदले सब हालात।
कुदरत जैसे बांटती, कोई नई सौगात।।
पर्वों की आहट हुई, सर्दी की पदचाप।
उधर गुलाबी ठंड भी, बदन रही है नाप।।
बदली-बदली सी फिजां, बदल रहे हालात।
दिन की घड़ियां भी घटीं, और फैलती रात।।



{ पुस्तक अंश / सूर्यबाला }

कई प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यबाला की आत्मकथात्मक संस्मरणों की पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' हाल में प्रकाशित होकर आई है। अपनी स्मृति की वीथियों से गुजरते हुए उन्होंने बहुत साधारण सी लगने वाली घटनाओं में व्याप्त असाधारण सौंदर्य और विमर्श को व्यक्त किया है। आज उनके जन्मदिन के अवसर पर प्रस्तुत है, इसी पुस्तक का एक संपादित अंश।

युवती वधुओं से एक गुहार

मनोविज्ञान कभी मेरा विषय नहीं रहा लेकिन मेरी 'मेरा विद्रोह', 'सुनंदा छोकरी की डायरी', 'सांझवाती' और 'निर्वासित' जैसी कहानियां पढ़कर लोग अकसर प्रश्न करते हैं, 'आप बच्चों और बूढ़ों के मनों को कैसे इतनी बारीकी से पढ़ पाती हैं?...तो मैं ही नहीं शायद हर रचनाकार जन्मजात मनोविज्ञानी होता है। यह मनोविज्ञान लेखन ही नहीं, जीवन में भी आई परिस्थितियों और चरित्रों से निर्वाह कर ले जाने की तरकीबें निकाल सकता है। मैंने इसी की मदद से श्वसुरालय के ग्राम्यांचल से जुड़े लोगों की मन, प्रकृति और समझ बांच ली थी। ये बेशक पुरानी और रीति-रिवाजों की लकीर पीटने वाले गलत परंपराओं, अंधविश्वासों को भी सही समझने वाले लोग हैं लेकिन मन के कुटिल नहीं। ये ऊपर से अड़ियल हैं, रूढ़ परंपराओं से अलग होने का उनमें भय व्यापता हैं, और वे असुरक्षित महसूस करते हैं लेकिन अंदर से सीधे, भोले और अपनेपन की अकूत मिल्कियत के मालिक हैं। उन्होंने जीवन में सदा अपना-पराया, तेरा-मेरा अलगा-गुजारी और थोड़ी-थोड़ी चीजों पर लड़ना, अड़ना ही देखा होता है। एक-दूसरे के खिलाफ अपने पतियों को भड़काती स्त्रियां, प्रायः हर विवाहित पुत्र, रात-दिन मां से पत्नी के विरुद्ध और पत्नी से उसकी मां के खिलाफ शिकायतों की अनवरत और अंधाधुंध कलह कोलाहल भरी शिकायतें सुनते-सुनते खब्त हो गया होता है। मुझे लेकर भी इस मां की, इस परिवार की कुछ वैसी ही रूढ़ धारणाएं बनी होंगी उसे संभालने में, उनकी धारणा बदलने में समय तो लगना ही था।

विश्व की प्रकृति प्रदत्त दुर्भाग्यपूर्ण विडंबनाओं में एक है, सास-बहू की परस्पर तनातनी वास्तव में यह एक ही 'पुरुष' पर अपना एकनिष्ठ वर्चस्व चाहने वाली उसके जीवन की दो अतिप्रिय स्त्रियों के क्लेश हैं क्योंकि वह दोनों का प्रिय है दोनों स्त्रियां उस पर अपना पूरा आधिपत्य चाहती हैं। पहली ने जिस बच्चे को जन्म दिया, शिशुपन से उसके सारे दुःख-सुख की साक्षी रही, एक ही रात में उस मां को एक-दूसरी युवती स्त्री द्वारा उसके पद से अपदस्थ कर दिया जाता है। (अनजाने ही सही) लेकिन बचपन से युवा होने तक जिसकी नींद सोयी, जिसकी नींद उठी, ऐसी मां और बेटे के निकटतम रक्त-संबंध के बावजूद, यह अपदस्थ मां, अपने 'दोनों बच्चों' (पुत्र-पुत्रवधु) से एक समझदार, सम्मानजनक व्यवहार, रिश्ता और निश्छल प्यार पा कर अति प्रसन्न और तृप्त भी हो सकती है, यह कोई युवती बहू शायद ही समझती हो। कम से कम प्रयोग के तौर पर ही, नाममात्र को ही, यदि वह पहले की तरह उस मां को घर की सम्राज्ञी, उसके बेटे की 'वही मां' बनी रहने का 'भरम' बनाये रख सके तो सीधे-सीधे सिर्फ भारत ही नहीं, विश्व की एक बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्या छूमंतर हो सकती है। लेकिन इतना तक भी धैर्य कहां हो पाता है। न हमारी युवती वधुओं में! न परिपक्ववय वाली मां में ही प्रायः खलनायिकत्व अपनाने से बाज न आती वधुरानी को भी सीधे-सीधे, संपूर्ण प्रभुत्व, पर्याप्त स्पेस और स्वछंद स्वतंत्रता चाहिए होती है। तो लुटी-पिटी, हारी-खिसियानी हजार पूर्वाग्रहों से ग्रस्त, मां जो तमाम गलत धारणाओं की शिकार पहले से ही होती हैं, उनकी धारणा का रंग पक्का होता जाता है। मैंने इन्हीं दो गहरी खाइयों के बीच सेतुबंध का एक प्रयोग सा किया था जो सफल रहा और पूरे कुटुंब में तीन पीढ़ियों तक जीवन और संबंधों की समरसता कायम रही। सच तो यह है कि परिवार और रिश्तों से जुड़ी स्थितियों को सिर्फ 'घरेलू' मानकर न मुंह बिचकाया जा सकता है, न उन्हें टरकाया जा सकता है। थोड़े-बहुत उलटफेर के साथ कॉर्पोरेट और कारोबारी संस्थानों में जटिल रिलेशनशिप को साधने में काम आने वाली तरकीबों और फॉर्मूलों से ही इस मसले को भी हल किया जा सकता है। शर्त सिर्फ एक, इसे घरेलू समझ कर हल्के से न लिया जाए। *



(वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' से साभार)

विज्ञापन...

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

नोट : वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष के ऊपर) का उपचार मात्र 12 हजार रुपए में

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार ग्वालियर में हो रहा है इस तकनीक के असाधारण लाभ-

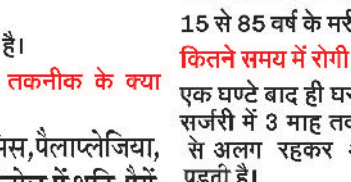

केन्द्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी से स्पाइन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए डॉ. प्रमोद पहारिया अवार्ड प्राप्त करते हुए।

स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?

यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के बाद पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एंव बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लाट फैलियर जैसे कॉम्पिलकेशन इसमें नही है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

NBC@

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली

ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466



चित्तौड़गढ़ मीरा महोत्सव-2026

शौर्य की फिजा में महकती भक्ति

इतिहास में राजपूताना वीरगाथाओं से समृद्ध प्रदेश राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में आज और कल आयोजित हो रहे मीरा महोत्सव में भक्ति की बयार की अनुभूति आप कर सकते हैं। यह महोत्सव न केवल राजस्थान के इतिहास बल्कि वहां की कला, संगीत, संस्कृति से रूबरू होने का अवसर भी प्रदान करती है। इस महोत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

सांस्कृतिक आयोजन
वीना गौतम

कुछ जगहें ऐसी होती हैं, जहां घूमने का अर्थ केवल खूबसूरत इमारतों को देखना, तस्वीरें खींचना और रास्ते में स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेना भर नहीं होता। वहां की मिट्टी, हवा और पत्थर भी कोई कहानी सुनाते हैं। राजस्थान का चित्तौड़गढ़ ऐसी ही जगह है। यहां दुर्ग की ऊंची प्राचीरें शौर्य और बलिदान की गाथाएं कहती हैं, विजय स्तंभ इतिहास की विराटता का अहसास कराता है और इन्हीं ऐतिहासिक दीवारों के बीच स्थित मीरा मंदिर प्रेम, समर्पण और आत्मिक स्वतंत्रता की एक बिल्कुल अलग दुनिया में ले जाता है। आज 25 और कल 26 अक्टूबर 2026 को आयोजित हो रहा मीरा महोत्सव ऐसा ही एक खास अवसर है।

संगीत-परंपरा की अनुभूति : राजस्थान पर्यटन के अनुसार इस दो दिवसीय आयोजन में मीरा की भक्ति, कविता, संगीत और राजस्थान की लोकपरंपराओं को केंद्र में रखा जाएगा। ऐसे में यह सफर केवल एक ऐतिहासिक शहर की सैर नहीं बल्कि उस प्रेम स्वरूपा महाभक्त मीरा को समझने का अवसर भी है, जिसने राजमहलों की मर्यादाओं के बीच अपने मन की स्वतंत्रता और कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को चुना।

बहती है मीरा की भक्ति धारा: चित्तौड़गढ़ का नाम आते ही रानी पद्मिनी, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा और राजपूताना के शौर्य की स्मृतियां सामने आ जाती हैं। लेकिन इस शहर की सांस्कृतिक पहचान का एक दूसरा पक्ष भी है, जो तलवार की चमक से नहीं, वीणा की धुन और भक्ति के स्वर से उजागर होता है। मीरा इसी पक्ष की प्रतिनिधि हैं। सोलहवीं सदी की भक्त-कवयित्री मीराबाई का जीवन कृष्ण के प्रति उनकी अनन्य आस्था और सामाजिक रूढ़ियों से टकराने के लिए याद किया जाता है। उनके पदों में प्रेम है, विरह है, प्रतीक्षा है और अपने आराध्य के प्रति ऐसा समर्पण है, जो किसी एक काल या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। उनकी कविता मंदिरों से निकलकर लोकगीतों, शास्त्रीय संगीत, भजन मंडलियों और आम लोगों की स्मृतियों में पहुंची। मीरा महोत्सव के दौरान भक्ति संगीत, काव्य और लोककलाओं के कार्यक्रम इस विरासत को नए सिरे से महसूस करने का अवसर देंगे।



पद्मिनी महल से गौमुख कुंड

ऐतिहासिक मीरा दुर्ग का दीदार: चित्तौड़गढ़ की यात्रा का सबसे प्रभावशाली पड़ाव है इसका विशाल दुर्ग। लगभग 180 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित यह ऐतिहासिक परिसर दूर से ही अपने विस्तार और भव्यता से आकर्षित करता है। इसकी लंबी चढ़ाई, प्रवेशद्वार और भीतर फैले स्मारक, आगंतुकों को धीरे-धीरे उस दौर में ले जाते हैं, जब मेवाड़ की राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान इसी दुर्ग से आकार लेती थी। इसकी प्राचीरों पर खड़े होकर आस-पास के भू-भाग को देखना अपने आपमें एक अनुभव है। यहां इतिहास किसी बंद संग्रहालय में रखी वस्तु की तरह नहीं बल्कि खुले आकाश के नीचे फैले परिदृश्य की तरह सामने आता है। समय ने कई इमारतों को क्षतिग्रस्त किया, लेकिन उनके अवशेष आज भी सत्ता, संघर्ष, कला और स्मृति की परतें खोलते हैं। विजय स्तंभ इसकी पहचान का प्रमुख हिस्सा है। इसकी बारीकियों को देखते हुए समझ आता है कि मध्यकालीन भारत में स्मारक केवल विजय का प्रतीक नहीं बल्कि शिल्पकला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम भी थे।

आकर्षक मीरा मंदिर: इसी दुर्ग के भीतर मीरा मंदिर पहुंचकर यात्रा का स्वर बदल जाता है। यहां राजसी वैभव और युद्धों की



मीरा मंदिर

स्मृतियों के बीच भक्ति की एक शांत दुनिया दिखाई देती है। मंदिर की स्थापत्य शैली, नक्काशी और परिसर का वातावरण पर्यटकों को कुछ देर ठहरने के लिए बाध्य करता है। यहां पहुंचकर मीरा के पदों को याद करना इस यात्रा को और अर्थपूर्ण बना सकता है। उनके काव्य में कृष्ण केवल आराध्य नहीं, बल्कि आत्मीय संवाद के साथी हैं। मीरा का प्रेम किसी सांसारिक उपलब्धि की आकांक्षा नहीं रखता, वह अपने विश्वास के साथ जीने की स्वतंत्रता का भी प्रतीक है। यही कारण है कि सदियों बाद भी उनकी कविता अलग-अलग भाषाओं और पीढ़ियों के लोगों को छूती है। मीरा मंदिर में कुछ समय शांत बैठकर आसपास के स्थापत्य को देखकर कल्पना कर सकते हैं कि कैसे किसी कवयित्री की निजी अनुभूति धीरे-धीरे सामूहिक सांस्कृतिक विरासत बन जाती है। पर्यटन का असली आनंद शायद इसी बिंदु पर मिलता है, जब कोई जगह केवल देखने की वस्तु नहीं रहती, बल्कि भीतर कुछ बदलने का अवसर बन जाती है।

ये स्थल भी हैं दर्शनीय: जब आप मीरा महोत्सव में शामिल होने के लिए चित्तौड़गढ़ जाएं तो यहां स्थित कई और स्थलों को देख सकते हैं। रानी पद्मिनी का महल, राणा कुंभा का महल, गौमुख कुंड और कालिका माता मंदिर जैसे स्थल, इतिहास तथा स्थापत्य के अलग-अलग रूप सामने लाते हैं। पद्मिनी महल का परिसर और उसके आस-पास का जलाशय दुर्ग के दृश्यात्मक आकर्षण को बढ़ाते हैं, जबकि राणा कुंभा का महल, मेवाड़ की राजसी विरासत को समझने का अवसर देता है। गौमुख कुंड पर पहुंचकर कुछ देर ठहरना अविस्मरणीय अनुभव हो सकता है। चट्टान से निकलकर कुंड में पहुंचते जलस्रोत का दृश्य प्रकृति और आस्था के पुराने संबंध की याद दिलाता है। दुर्ग के भीतर जैन मंदिर भी हैं, जिनकी बारीक नक्काशी और स्थापत्य विविधता इस क्षेत्र की बहुधार्मिक सांस्कृतिक विरासत का परिचय देती है। *

इसे भी करें एंज्वॉय

चित्तौड़गढ़ की यात्रा में राजस्थानी खान-पान का स्वाद भी शामिल होना चाहिए। दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी और स्थानीय शैली में तैयार पारंपरिक व्यंजन भोजन को यात्रा का यादगार हिस्सा बना सकते हैं। स्थानीय बाजारों में हस्तशिल्प, पारंपरिक कपड़े और क्षेत्रीय कलाकृतियां देखी, खरीदी जा सकती हैं।

बेहतर और सफल जीवन जीने के लिए सबको बदलने के बजाय खुद को समझिए और जरूरी बदलाव कीजिए। इससे आप मनचाही सफलता तो पाएंगे ही, जीवन में सार्थकता भी आएगी।

दुनिया को नहीं खुद को बदलिए

सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन



अधिकतर लोग अकसर इसलिए परेशान रहते हैं कि ये दुनिया वैसी क्यों नहीं है, जैसी वे चाहते हैं? सच कहा जाए तो उनकी परेशानी का मूल ही यही सोच है। सुकून, समृद्धि और सफलता के लिए असल में जरूरत होती है खुद को बदलने की।

व्यर्थ न करें मानसिक ऊर्जा: दूसरों को बदलने की कोशिश में अपनी ऊर्जा बर्बाद मत कीजिए। हमारे तनाव का बड़ा हिस्सा अकसर उन चीजों से आता है, जो हमारे नियंत्रण में हैं ही नहीं। कोई हमारे बारे में क्या सोचता है, किसने हमें फोन नहीं किया, किसी ने हमारी बात क्यों नहीं मानी या किसी ने हमारे साथ वैसा व्यवहार क्यों नहीं किया जैसा हम चाहते थे? इन सवालों में मानसिक ऊर्जा खपती है। 'लेट देम' थ्योरी इसी प्रवृत्ति से बाहर निकलने का एक सरल तरीका है। किसी के व्यवहार से परेशान हों तो तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय खुद से पूछें, 'क्या यह मेरे नियंत्रण में है?' यदि जवाब 'नहीं' है तो अपनी ऊर्जा बचाइए।

समझें समय का सही उपयोग: समय बचाने से पहले यह तय कीजिए कि समय किसके लिए चाहिए? आज समय प्रबंधन पर हजारों तकनीकें उपलब्ध हैं, लेकिन हमारी टू-डू लिस्ट फिर भी खत्म नहीं होती। याद रखिए, हमारे पास हर काम करने के लिए अनंत समय नहीं है, इसलिए हर अवसर स्वीकार करना और हर काम पूरा करना संभव नहीं। इसका सीधा अर्थ है, प्राथमिकताएं तय करनी होंगी। जिस काम के लिए समय नहीं है, उसे 'नहीं' कहना भी समय प्रबंधन है।



लोगों की परवाह छोड़िए: 'लोग क्या कहेंगे' जैसे डायलॉग को जिंदगी का कंट्रोलर मत बनने दीजिए। समाज की राय जरूरी हो सकती है, लेकिन यदि हर निर्णय इसी डर से लिया जाए कि दूसरे क्या सोचेंगे तो धीरे-धीरे अपनी पसंद, पहचान और इच्छा दबने लगती है। आपका काम, आदतें, स्वभाव हर व्यक्ति को पसंद आना संभव भी नहीं, जरूरी भी नहीं। यदि हर टिप्पणी आपके फैसले बदलने लगे तो जीवन आपका होकर भी आपका नहीं रहेगा। दूसरों का सम्मान कीजिए, पर अपनी जिंदगी का नियंत्रण उनके हाथ में मत दीजिए।

दिमाग पर हावी न हो मोबाइल: आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जो उपकरण हमें दुनिया से जोड़ने के लिए बना था, वही हमारा ध्यान सबसे ज्यादा भंग कर रहा है। हर कुछ मिनट में फोन देखना, रील बदलना, नोटिफिकेशन जांचना और बिना उद्देश्य स्क्रॉल करना एक आदत सी बन गई है। समाधान तकनीक को त्यागना नहीं, बल्कि उसकी सीमा तय करना है। सुबह उठते ही फोन न देखना, भोजन के समय उसे दूर रखना और सोने से पहले कुछ समय स्क्रीन-मुक्त रखना छोटे लेकिन प्रभावी कदम हो सकते हैं। डिजिटल अनुशासन आज की नई जीवनशैली का अनिवार्य हिस्सा है।

रिश्तों में बातचीत जरूरी: हमारी कई पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्याएं वास्तविक घटना से ज्यादा उसके बारे में बनाए गए अनुमान से पैदा होती हैं। किसी ने देर से जवाब दिया तो हमने मान लिया कि वह नाराज है। किसी ने कम बात की तो मान लिया कि रिश्ता खराब हो गया। इसके बजाय सीधे संवाद करना बेहतर है। आरोप लगाने के बजाय सवाल पूछिए, प्रतिक्रिया देने से पहले सामने वाले की बात सुनिए। रिश्तों में हर बात पर सहमत होना जरूरी नहीं, लेकिन असहमति के बीच सम्मान बचा रहना जरूरी है। अच्छा रिश्ता वह नहीं, जिसमें कभी झगड़ा न हो, अच्छा रिश्ता वह है, जिसमें झगड़े के बाद बातचीत का दरवाजा बंद न हो।

मुझसे नहीं होगा सोचना ठीक नहीं: कई क्षमताएं अभ्यास और सीखने से विकसित हो सकती हैं। उम्र, पिछली असफलता या पुरानी पहचान को भविष्य की अंतिम सीमा मान लेना जरूरी नहीं। जिसने कभी मंच पर भाषण नहीं दिया, वह अभ्यास से वक्ता बन सकता है। जिसने कभी नहीं लिखा, वह लिखना सीख सकता है। जिसने तकनीक से दूरी बनाई है, वह धीरे-धीरे डिजिटल कौशल हासिल कर सकता है।

व्यस्त नहीं एकाग्र रहें: एक साथ कई काम करने की हमारी आदत वास्तव में कई बार सारे कामों की गुणवत्ता कम कर देती है। लगातार आने वाले संदेश, ई-मेल और नोटिफिकेशन दिमाग को एक काम से दूसरे काम की ओर खींचते रहते हैं। इसलिए रोज कुछ समय एक महत्वपूर्ण काम के लिए बिना व्यवधान के निर्धारित करना उपयोगी है। तीस मिनट के कंसंट्रेशन टास्क से शुरुआत कीजिए। मोबाइल दूर रखिए, अनावश्यक नोटिफिकेशन बंद कीजिए। *

प्रिकॉशन
शैलेंद्र सिंह

इन दिनों यंगस्टर्स में ईयरफोन से म्यूजिक सुनने की हैबिट बहुत तेजी से बढ़ रही है। लेकिन असावधानी बरतने पर इससे सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। विश्व श्रवण दिवस (27 अक्टूबर) पर जानिए उपयोगी बातें।

हार्मफुल हो सकती है ईयरफोन की दीवानगी





बस-मेट्रो में सफर करता युवा, अपनी गाड़ी में बैठकर ऑफिस जा रहा प्रोफेशनल हो, सड़क पर पैदल चलता किशोर, जिम में पसीना बहाता यंगस्टर या रात को बिस्तर पर लेटा विद्यार्थी, इन सबके बीच इन दिनों जो हैबिट तेजी से पॉपुलर हुई है, वह है- कानों में ईयरफोन लगाए रहना। म्यूजिक, पॉडकॉस्ट, वीडियो और ऑनलाइन बातचीत की दुनिया अब इतनी निजी हो गई है कि आस-पास की आवाजें कई बार हमारे लिए गैर जरूरी हो जाती हैं। लेकिन इस निजी दुनिया का एक खतरा भी है। जिस पर हम अकसर तब तक ध्यान नहीं देते, जब तक सुनाई देने वाली आवाजें धीमी नहीं पड़ने लगतीं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी: डब्ल्यूएचओ के मुताबिक दुनिया भर में 12 से 35 वर्ष के 1 अरब से ज्यादा युवाओं को मनोरंजन के दौरान तेज आवाज के असुरक्षित संपर्क के कारण सुनने की क्षमता प्रभावित होने का खतरा रहता है। इसमें व्यक्तिगत ऑडियो, उपकरणों पर तेज आवाज में संगीत सुनना और मनोरंजन स्थलों पर अधिक शोर शामिल है।

स्मार्टफोन और म्यूजिक: पहले संगीत सुनने के लिए हम रेडियो, टेप रिकॉर्डर या म्यूजिक सिस्टम का सहारा लेते थे। लेकिन अब कुछ सेकेंड में ही हम अपने मनपसंद गाने सुन सकते हैं। यह सुविधा उपलब्ध कराई है, हमारी जेब में मौजूद रहने वाले स्मार्टफोन ने। यात्रा के दौरान, पढ़ाई करते समय, व्यायाम के वक्त और कई बार सोने से पहले तक हमारे विशेषकर युवाओं के कानों में ईयरफोन लगे रहते हैं। जिन कोशिकाओं की मदद से ध्वनि के संकेत हमारे मस्तिष्क तक पहुंचते हैं, वे कोशिकाएं लगातार डिजिटल संगीत के संपर्क में रहने के कारण क्षतिग्रस्त होने लगती है। इससे सुनने की क्षमता प्रभावित होने लगती है।

खतरा केवल तीव्रता में नहीं: जोखिम तय करने में तीन बातें अहम है- आवाज कितनी तेज है, वह कितनी देर तक सुनी जा रही है और ऐसा कितनी बार होता है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक श्रवण संबंधी सुरक्षित दिशा-निर्देशों के तहत औसतन 80 डेसिबल की ध्वनि के संपर्क में एक सप्ताह में 40 घंटे तक रहने से वयस्कों के लिए संदर्भित सुरक्षित सीमा मानी जाती है। यदि आवाज का स्तर 90 डेसिबल हो जाए, तो यह अवधि घटकर सप्ताह में केवल 4 घंटे रह जाती है। इसका मतलब है कि यांत्रिक आवाज थोड़ी भी बढ़ जाए तो कान की सुरक्षा प्रणाली असुरक्षित हो जाती है।

संगीत सुनिए लेकिन: संगीत जरूर सुनिए, लेकिन संगीत हमेशा सुनने की शक्ति बचाकर सुनिए। आवाज कम रखिए, चार-चार घंटे तक लगातार संगीत ही नहीं किसी भी वॉयस को सुनने से बचिए। हर आधे या एक घंटे बाद कानों को आराम दीजिए। आखिरकार संगीत जिंदगी को खूबसूरत बनाने का जरिया है, लेकिन इससे अपनी जिंदगी में सुनने की शक्ति को खत्म करके बदसूरत न बनाएं। *



'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां' गीत दृश्य



फिल्म 'बागबान' का इमोशनल सीन



'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा' गीत दृश्य

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश

हिंदी फिल्मों में दांपत्य प्रेम को अलग-अलग तरह से प्रस्तुत किया जाता रहा है। कई ऐसे गीत रचे गए हैं, जो आज भी करवा चौथ जैसे पर्व पर जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों और दांपत्य प्रेम पर केंद्रित गीतों पर एक नजर।

फिल्मी गीतों में खूब दमकता रहा है दांपत्य प्रेम

पारिवारिक, धार्मिक ही नहीं हर तरह की हिंदी फिल्मों में पति-पत्नी के रिश्ते को बहुत महत्व दिया जाता रहा है। खासतौर पर दांपत्य जीवन खुशहाल बनाने के लिए पत्नी के द्वारा किए जाने वाले त्याग और समर्पण को भी फिल्मों में अलग-अलग नजरिए से फिल्माया जाता रहा है। पत्नी के द्वारा अपने सुहाग यानी पति के लिए व्रत की बात आती है तो बॉलीवुड में इस पर भी केंद्रित कुछ फिल्मी दृश्य और एक से बढ़कर सुंदर गीत रचे गए हैं।

यादगार हैं ये गीत: पति-पत्नी के प्रेम को समर्पित करवा चौथ के गीतों की बात करें तो 65 वर्ष पहले बनी फिल्म 'बहू-बेटी' का एक गीत सबसे पहले याद आता है। माला सिन्हा, अशोक कुमार, जॉय मुखर्जी और मुमताज स्टारर इस फिल्म में आशा भोंसले के गाए गीत 'आज है करवा चौथ सखी री, मांग ले सुख दान' को आज भी याद किया जाता है। इसमें करवा चौथ के पर्व को जिस तरह से उत्सव जैसा दिखाया गया, वह बाद की फिल्मों के लिए नजीर बना। इसके बाद भी कुछ फिल्मों में करवा चौथ से जुड़े गीत या कहानी पर आधारित दृश्यों ने पति के प्रति पत्नी के प्रेम, निष्ठा, समर्पण, त्याग और सम्मान को प्रभावी तरीके से पेश किया जाता रहा है।

वर्ष 1969 में रिलीज हुई फिल्म 'सुहागरात' का गीत 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे', भी दांपत्य प्रेम को बहुत खूबसूरती से प्रकट करता है। इसी तरह वर्ष 1973 में रिलीज हुई फिल्म 'सौदागर' में फूल बानो (पद्मा खन्ना) अपने पति मोती (अमिताभ बच्चन) के लिए जब 'सजना है मुझे सजना के लिए...' गाती हैं तो एक सजी-धजी पत्नी का चेहरा सामने आ जाता है, जो अपने पति को खुशी देने के लिए सजती-संवरती है। भले इसे करवा चौथ से सीधा जोड़ा नहीं जाए पर यह हर करवा चौथ पर उन गीतों में शामिल होता है, जो इस दिन जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं।

कुछ इसी तरह का एक गाना फिल्म 'गीत गाता चल' का है, जो 51 वर्ष पहले आई थी। 'मैं वही, दर्पण वही, न जाने ये क्या हो गया कि सब कुछ लागे नया-नया..' में सारिका-सचिन की जोड़ी एकदम से भारतीयता में रची-बसी नजर आती है। पूरी तरह लगता है कि दांपत्य प्रेम को समर्पित है यह गीत।

ये फिल्में भी हैं यादगार: करवा चौथ को पूरी तरह से समर्पित फिल्म 'करवा चौथ' 1978 में रामलाल हंस ने बनाई थी, जो इस पर्व के लिए पहली फिल्म मानी जाती है। आशीष कुमार, कामिनी कौशल, आद्या, पद्म चव्हाण, रमेश देव और हेलन ने इसमें अभिनय किया था। उषा मंगेशकर के गाए गीत 'करवा चौथ का व्रत ऐसा', इस मूवी का मुख्य गीत था। इसमें हेलन ने अपनी सखियों के साथ पारंपरिक तौर तरीके से करवा चौथ को सेलिब्रेट किया।



'करवाचौथ का व्रत ऐसा' गीत मे हेलन

करवा चौथ पर दांपत्य प्रेम को प्रभावी तरीके से प्रेजेंट करने वाली दो और फिल्मों का जिक्र किया जा सकता है। ये हैं- 'मांग भरो सजना' और 'सुहागरात'। सन 1980 में जब 'मांग भरो सजना' में पति का दो पत्नियों के बीच में संतुलन बनाने का प्रयास करना, उस दौर में महिलाओं के बीच सर्वाधिक चर्चा का विषय बन गया था। रेखा और मौसमी चटर्जी के किरदारों ने इसमें जीतेंद्र के लिए व्रत रखकर पूरे समर्पण के साथ इस गीत के फिल्मांकन को प्रस्तुत किया है। आशा भोसले तथा लता मंगेशकर की आवाज में गाया यह गीत, 'दीपक मेरे सुहाग का जलता रहे...' आज भी करवा चौथ के अवसर पर विवाहित महिलाएं सुनना पसंद करती हैं।

पति के साथ को समर्पित भावुक गीत: फिल्म 'सुहागरात' का गीत, 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे...' पत्नी का पति के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा को दिखाता है। उसका मन सूरज-चांद से भी नहीं भर रहा है तो वह पति की जिंदगानी के लिए उससे आगे निकल जाती है। उसे लगता है कि सूरज चांद तो छिप सकते हैं पर मां गंगा कभी नहीं सूखेंगी और वह उससे अपने पति का जीवन जोड़ देती है। दांपत्य प्रेम की पराकाष्ठा व्यक्त करता है यह गीत।

ये गीत-दृश्य भी हैं दांपत्य को समर्पित: नए दौर की फिल्मों में भी कई गीत ऐसे रचे गए, जिन्होंने दर्शकों को करवा चौथ के प्रति संवेदनशील बनाया और इस पर्व की महत्ता को नया मोड़ दिया। इनमें 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का 'घर आ जा परदेसी', 'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां', 'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा बादल में', 'जख्म' का 'गली में आज चांद निकला' के अतिरिक्त भी कई ऐसे गीत हैं, जो भले ही करवा चौथ का आधार नहीं लेते हों पर इस दिन विवाहित महिलाएं गुनगुनाती नजर आती हैं। हां, 'राजा हिंदुस्तानी' का वह सीन भी इस दिन अवश्य याद आता है, जिसमें करिश्मा कपूर अपने पति के लिए निर्जला व्रत रखती है और एक भावनात्तक मोड़ इसका एंड करता है। ठीक वैसे ही जैसे करवा चौथ पर चांद देखने के बाद पति-पत्नी एक-दूसरे को देखते हुए ऐसे लगते हैं जैसे कह रहे हों सात जन्मों का रिश्ता है हमारा। यहां फिल्म 'बागबान' का जिक्र करना भी जरूरी है। इसमें अमिताभ का किरदार, अपनी पत्नी (हेमा मालिनी) के लिए व्रत रखता है। दोनों एक-दूसरे से दूर रहकर भी दांपत्य के अटूट प्रेम बंधन में जुड़े दिखते हैं। *

पर्व / आर. सी. शर्मा

शरद पूर्णिमा चांदनी रात में भक्ति की दिव्यता



भारतीय सनातन परंपरा में पर्व-त्योहार आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाले आध्यात्मिक सोपान भी होते हैं। इन्हीं पावन पर्वों में शरद पूर्णिमा का विशिष्ट स्थान है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व प्रकृति की अनुपम छटा, चंद्रमा की धवल चांदनी, श्रीकृष्ण की महारास लीला और मां लक्ष्मी की आराधना के कारण विशेष धार्मिक महत्व रखता है।

महारास की दिव्य रात्रि: शरद पूर्णिमा का सर्वाधिक भावपूर्ण आध्यात्मिक संदर्भ भगवान श्रीकृष्ण की महारास लीला से जुड़ा है। श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंद में वर्णित रासपंचाध्याई भगवान के माधुर्य स्वरूप और गोपियों की अनन्य भक्ति का अद्भुत आख्यान प्रस्तुत करती है। शरद ऋतु की निर्मल रात्रि, यमुना का तट, वृंदावन की कुंज गलियां और मुरली की मधुर तान यह समूचा परिवेश भक्ति साहित्य में दिव्यता के अनुपम बिंब के रूप में प्रतिष्ठित है। भागवत परंपरा में रासलीला को लौकिक प्रेम की सीमाओं से ऊपर उठकर ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव से देखा जाता है। महारास का आध्यात्मिक मर्म यही है कि जब अहंकार, स्वार्थ और सांसारिक आसक्ति का आवरण हटता है, तब हृदय में अनन्य भक्ति का प्रकाश प्रकट होता है। इस दृष्टि से शरद पूर्णिमा केवल चंद्रदर्शन की रात्रि नहीं बल्कि कृष्णमय चेतना में निमग्न होने का पावन अवसर है। मंदिरों में ठाकुरजी का विशेष श्रृंगार, भजन-कीर्तन और रासलीला के आयोजन इसी भक्तिभाव को साकार करते हैं।

चांदनी में अमृतवर्षा: सनातन धर्म में चंद्रमा को मन का अधिष्ठाता माना गया है। वैदिक एवं पौराणिक परंपराओं में चंद्रदेव की उपासना, सोम की अवधारणा और शीतलता के प्रतीक के रूप में चंद्रमा का विशेष महत्त्व है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में आकाश में पूर्ण चंद्रमा अपनी उज्ज्वल आभा बिखेरता है। वर्षा ऋतु के पश्चात निर्मल आकाश और स्वच्छ वातावरण इस प्राकृतिक सौंदर्य को और भी मनोहारी बना देते हैं। लोकमान्यता है कि इस रात्रि चंद्रमा की किरणों से अमृत बरसता है। इसी विश्वास के कारण अनेक घरों में खीर बनाकर खुले आकाश के नीचे चंद्रकिरणों में रखने और अगले दिन उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करने की परंपरा प्रचलित है। इस परंपरा में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, पारिवारिक सहभागिता और पवित्र भावना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

व्रत-पूजन: शरद पूर्णिमा पर श्रद्धालु अपनी पारिवारिक परंपरा और सामर्थ्य के अनुसार व्रत रखते हैं। प्रातः स्नान के उपरांत देवपूजन, इष्टदेव का स्मरण और दान-पुण्य किया जाता है। संध्याकाल में चंद्रदर्शन के पश्चात चंद्रदेव को अर्घ्य अर्पित करने की परंपरा भी अनेक स्थानों पर प्रचलित है। मंदिरों में विशेष भोग, दीपदान, हरिनाम संकीर्तन और धार्मिक प्रवचन आयोजित किए जाते हैं। कहीं श्रीकृष्ण को श्वेत वस्त्रों और पुष्पों से सजाया जाता है, तो कहीं रात्रि में भजन-मंडलियां भक्तिरस का संचार करती हैं। इन समस्त अनुष्ठानों का मूल उद्देश्य अंतःकरण की शुद्धि और ईश्वर के प्रति श्रद्धा का संवर्धन है। *